तेरा रथ, सारथी तू, इस 'मैं' को जहाँ भी ले जाओ...

...मैं क्यों पूछूँ हे राम तुझे, अरे कहाँ मुझे ले जा रहे।
जब तुम ही संग में बैठ के, मुझे प्रीत के गीत सुना रहे।।

मेरा लक्ष्य तू ही है राम मेरे, मोरे संग जब तुम आये हो।
अन्य क्या तेरे संग में है, काहे मुझे बतलाये हो।।

जो भी हो सो हुआ करे, तुम को ही तो होता है।
विपरीत आज प्रिय लगे, वह तुम सों ही तो होता है।।

विरहन बन के मैं क्यों रोऊँ, जब संग में मेरे तुम ही हो।
किसी अरण्य में क्यों खोजूँ, जब मन में मेरे तुम ही हो।।

नैया के खेवैया राम मेरे, जित चाहो तुम अब ले जाओ।
तूने अपना बना लिया मुझको, अपने को ही तो ले जाओ।।

मैं तुमको क्यों राम कहूँ, कहाँ पे रथ यह ले जाओ।
तेरा रथ, सारथी तू, इस 'मैं' को जहाँ भी ले जाओ।।

यह 'मैं' मेरी हे राम मेरे, तुम पे मिटने आई है।
राखी बनकर पिया मेरे, तेरे चरण में बिछने आई है।।

'मैं' का कुछ योजन नहीं, प्रयोजन नहीं इस जहान में।
जाये मिटी वह मिट रही, देख पिया मेरे राम में।।

तन तो मेरा था ही न, यह 'मैं' भी देख है जा रही।
राम मेरे तेरे चरण में ही, आज है मिटती जा रही।।

कौन हूँ 'मैं' किसे पूछें, जब तेरे बिना अरे कोई नहीं।
क्या यह पूछूँ राम मेरे, क्यों 'मैं' यह तेरी होई नहीं।।

दोऊ सेना के मध्य में रथ लाकर, क्या मुझे यह बताओगे?
किस कारण 'मैं' मिटी नहीं, यह राज़ मुझे बताओगे?

इस रथ को जित चाहो, राम तुम ही ले जाओ रे।
मुझे राम नाम की प्यास लगी, मुझे राम नाम ही देते जाओ रे।।...

'श्रीमद्भगवद्गीता' अध्याय १/२२ - १८.४.१९६०

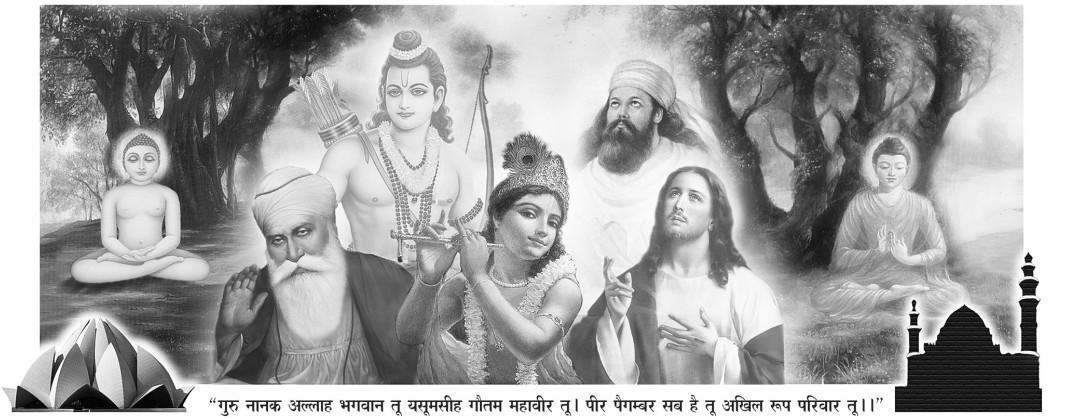

"गुरु नानक अल्लाह भगवान तू यसूमसीह गौतम महावीर तू। पीर पैगम्बर सब है तू अखिल रूप परिवार तू।।"

परम पूज्य माँ

अनुक्रमणिका

३. कर्ता कर्तार हैं!
जीव निष्क्रिय है...
सुश्री - छोटे माँ

८. वैदिक विवाह
अर्पणा प्रकाशन 'वैदिक विवाह' में से

१८. जीव का कर्तव्य क्या होगा...
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता - भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' में से

२०. मंनै पावहि मोखु दुआरु...
अर्पणा प्रकाशन 'जपु जी साहिब' में से

२३. प्यार कुछ माँगता नहीं... देता ही देता है!
श्रीमती पम्मी महता

२८ जो मिले वा देन जान, वा रज़ा में वह चले...
पिताजी के साथ पूज्य माँ के अलौकिक संवाद

३२. काम, क्रोध तथा लोभ, तीनों नरक के द्वार हैं...
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता' में से

३७ अर्पणा समाचार पत्र

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ १०, हरियाणा द्वारा जून २०१४ को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ-८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

मन्दिर में परम पूज्य माँ, सुश्री छोटे माँ एवं अन्य सदस्य

कर्ता कर्तार हैं!

जीव निष्क्रिय है...

सुश्री - छोटे माँ

पूज्य छोटे माँ द्वारा इस आत्ममंथन में भक्त साधक के भावोद्गार प्रतिबिम्बित होते हैं... यह पूज्य छोटे माँ की लेखनीबद्ध करने की अद्भुत क्षमता ही थी, जिसने विश्वभर को परम पूज्य माँ के स्वतः स्फुरित 'उर्वशी' प्रवाह में निहित अविश्वनीय दिव्य ज्ञान से समृद्ध किया है। सम्पूर्ण मानवता छोटे माँ द्वारा भावी पीढ़ियों के लिए इस अपार योगदान के लिए सदैव ऋणी रहेगी...

परम पूज्य माँ ने सच ही हम जैसे साधारण जीवों पर बहुत कृपा करी है। गद्गद् होकर मुखारविन्द से यही भाव बह निकलता है -

'कौन गुण गाऊँ मैं...'

राम जी की कृपा से परम पूज्य माँ के साथ दीर्घकाल तक रहने का सौभाग्य मिला, जिसे याद करते हुए मन गद्गद् हो उठता है। हमारे जैसे साधारण जीवन जीते हुए परम पूज्य

माँ ने दिव्य विलक्षण दृष्टिकोण का प्रमाण दिया है। ऐसा प्रतीत होता है कि साधु-गण, ऋषि-मुनि आदि की पुकार का ही यह प्रसाद होगा जिसके परिणाम-स्वरूप यह दिव्य अनुभव हमें मिला।

पूज्य माँ को आरम्भ से ही यही कहते हुए सुना -
'... य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु, ते मयि सन्तु।'
I want to be the living Embodiment of shatras.

आरम्भ से ही, सद्गुरु के पावन सान्निध्य के फलस्वरूप आन्तर्मुखता का सुअवसर उन्हीं की कृपा से प्राप्त हुआ। तब ही अपने दर्शन हुए कि मन में कैसी-कैसी वृत्तियाँ उठ सकती हैं एवं उनका परिणाम क्या हो सकता है?

बारम्बार जग में कर्मबीज के फलस्वरूप जीव मनोजग में भ्रमण करता है; परन्तु इस भ्रमण में अतृप्त चाहना अतृप्त ही रह जाती है और कहीं पर भी पहुँच नहीं पाती। माया से आवृत होकर, ऐसा प्रतीत होता है कि मनोजग ही सत्य है -

- मुझे जो भी मिला है, वह मुझे मेरे ही कारण मिला है।

- यह मेरा ही प्रयत्न है और इसे प्राप्त भी मैंने अपने परिश्रम से ही किया है।

- यह मेरी ही कमाई है।

इस प्रकार से अपना अधिकार मान कर हम माया-जाल में फँसते चले जाते हैं। परिणाम-स्वरूप आंतर में प्रकाश के स्थान पर घोर अंधकार में ही रमण करते रह जाते हैं।

ऐसे ही अधंकार में रमण करते-करते, प्रथम बेला ३ मार्च १९४८ को परम पूज्य माँ से सम्पर्क हुआ। मेरे जीवन में, ऐसा प्रतीत होता है कि वहाँ से ही एक नई जागृति का आरम्भ हुआ। परम पूज्य माँ ने आरम्भ में ये वाक् कहे, (जो वाक् सहज ही उनके मुखारविन्द से बह गये) -

'अरे! तू तो मेरा अपना आप है!'

और इस वाक् को सुन कर, मेरा काल्पनिक संसार यहीं से आरम्भ हो गया। मैं मूढ़ा, जो अपने आप को तन मानती थी, उसकी कल्पना यहीं से आरम्भ हो गई। मुझ में ही कोई विशेष गुण हैं, जिसके कारण परम पूज्य माँ ने मुझे ये वाक् कहे। जितना-जितना मुझे पूज्य माँ का सम्पर्क मिलता गया, मेरी कल्पना की उड़ान और ऊँची होती गई।

परम पूज्य माँ की मुसकान के साथ-साथ उनका सामीप्य पा कर मैं यही समझती रही कि 'मैं बहुत विशेष स्थान रखती हूँ'। मेरी मनोउड़ान अपनी बहिर्मुखता के भावों में रमण करते हुए

यही सोचने लगी कि मेरा परम पूज्य माँ के साथ विशेष नाता है। इन भावों में रमण करते-करते यही मानने लगी कि 'पूज्य माँ केवल मेरे हैं', उन पर मेरा विशेष अधिकार है।

अपना अधिकार मान कर मेरा तो व्यवहार ही बदल गया। संग के साथ-साथ कई प्रकार की नई वृत्तियाँ भी जाग गईं। सत्यता ने भी साथ छोड़ दिया। अब मैं परम पूज्य माँ के ऊपर अपना अधिकार सभी के सामने प्रदर्शित करने लगी।

पूज्य माँ के साथ सुश्री छोटे माँ एवं श्री रत्ती सभरवाल

वृत्ति अपना विस्तार करते हुए कहाँ तक जा सकती है, मुझे परम पूज्य माँ की कृपा से इसके दर्शन होने लगे। मैंने कभी यह सोचा ही नहीं और न ही अपनी ओर देखा कि मैं किस नाते अपना यह अधिकार दर्शा रही हूँ! यह दर्शन करते हुए समय व्यतीत होता चला गया। मैं किस नाते यह अधिकार मानती हूँ, इसका तो मुझे पता ही नहीं था।

माँ से निःस्वार्थ प्रेम पाकर हम जैसे अंधकार में रमण करने वाले तनधारियों का क्या हश्र होता है, इसके दर्शन तो मुझे अपने ही जीवन में प्राप्त हुए। पूज्य माँ सहज जीवन में मेरे तद्रूप होकर, मेरे स्तर पर आकर, उसी प्रेम के साथ व्यवहार करते रहे। जब मुझे उनके पास रहने का सौभाग्य मिला, तो पास रहते हुए भी मैं उन्हें पहचान न पाई।

परम पूज्य माँ साधना के विषय में अनेकों बार कहा करते, *'दैवी गुण विपरीतता में पलते हैं।'* कई बार, अपने प्रति मेरे विपरीत व्यवहार को देख कर कह उठते - *'तुम्हीं तो मेरी पूजा हो।'* मुझे इसके सत्दर्शन भी कभी नहीं हुए। आरम्भ से ही मैं यही समझती रही कि मुझे जो कुछ भी मिला है - 'मैं उसकी पात्र हूँ।'

शब्द ज्ञान तो था, जो मैं वाक् राही कहती जाती थी। परन्तु कर्ता कर्तार हैं, इसे मैं मानती थी, ऐसी तो बात ही नहीं थी। जिसके कारण मैंने अपने इस जीवन में ही हर प्रकार का अपना व्यवहार देखा। राग-द्वेष, संग-मोह, चाहना-कामना सब प्रकार के दर्शन परम पूज्य माँ के चरणों में रहते हए मुझे अपने में मिले।

इस प्रकार परम पूज्य माँ के चरणों में रहते हुए, मैं अपने मोह से आवृत होकर यही मानती चली गई कि माँ मुझे बहुत प्यार करते हैं, क्योंकि मैं बहुत श्रेष्ठ हूँ। इस प्रकार के भावों में ही मैं रमण करती रही।

परम पूज्य माँ के साथ रहते हुए, राम जी के चरणों में बैठने का सौभाग्य भी मिलता रहा। राम जी की कृपा से शास्त्र भी लेखनीबद्ध करती गई। यह सब करते हुए मैं यही समझती रही कि मैं तो पूजा ही कर रही हूँ। इस ओर कभी ध्यान ही नहीं दिया कि मेरा कर्ता भाव बलवान होता जा रहा है।

सत्संग करने तो जाती रही, परन्तु उसके परिणाम-स्वरूप जीवन में शब्द-ज्ञान के अभ्यास को ही मैं पूजा मानती रही। राग-द्वेष, आपस में बैर-विरोध की भावना भी ज्यों की त्यों बनी रही। जब मैं पूज्य माँ के पास आई थी, तो आरम्भ में, मैंने माँ से यही माँगा था कि माँ! मुझे भी उतना ही मान मिलना चाहिये, जितना मान आपको मिलता है।

आज इस विषय पर विचार करके, साथ-साथ अपने कर्मों को देखते हुए, यह प्रत्यक्ष रूप से समझ आ रही है कि कर्ता तो कर्तार हैं। मैं पूर्ण सुअवसर मिलने पर भी अपनी मान्यताओं के जाल में ही फँसी रही।

धारवाड़ में, परम पूज्य माँ ने, १९६४ में, बच्चों को 'शबरी' की गाथा सुनाई। उसे मैं पीछे बैठकर लेखनीबद्ध करती तो रही, परन्तु इस का भी मैंने यही अर्थ लिया कि मुझे सब समझ आ गई है। 'शबरी' की गाथा में ही परम पूज्य माँ के मुखारविन्द से यह सुना कि 'आवरण मिटाव ही साधन है, इस बिन दूजी राह नहीं'।

सत्संगों पर यही बतलाया करती थी कि, 'आवरण मिटाव ही साधन है।' यही नहीं, संग में मेरी मान्यता भी यही बन गई कि आवरण मिटाव की समझ सब को आ गई है। आज अपने ही दर्शन करते हुए अपने पर ही लाज आती है। मैंने तो इसका अर्थ ही नहीं समझा।

परम पूज्य माँ तो यही बतलाते थे कि, 'यह शब्द-ज्ञान है। शब्द-ज्ञान से केवल शब्दों तक ही समझ आती है। वास्तव में तो उसे ही समझ आती है, जो इसे जीवन में मान लेता है एवं धारण कर लेता है। इससे उस पर रंग चढ़ जाता है।'

पूज्य माँ के मुखारविन्द से यह भी बहाव बह निकला -

"समझ समझ के समझ थकी, समझ को समझ न समझ सकी।"

मैं इसी भ्रम में ही रही कि बोलने से जो अभ्यास हो गया है वही ज्ञान है। जीवन में तो उसका रंग ही नहीं चढ़ा। आज राम जी की कृपा से समझ में आ रहा है कि ज्ञान तो जीवन होता है। परम पूज्य माँ का जीवन तो प्रमाण सहित ज्ञान है। किसी के द्वारा अपमानजनक शब्द सुनकर भी पूज्य माँ यही कह दिया करते -

"मान मिला अपमान मिला, हर रूप में मुझको राम मिला।"

परम पूज्य माँ हर प्रकार से मुझे समझाते रहे। जो शास्त्रों में पूज्य माँ के श्री मुखारविन्द से प्रवाह बहा, वही उनका जीवन है, उसके भी दर्शन होते रहे।

परम पूज्य माँ की कृपा से ही समझ आने लगा कि शब्दों में ज्ञान आ जाने को ज्ञान नहीं कहते। बड़े-बड़े भाषण से भी जो ज्ञान आता है उसके साथ हम बदल नहीं जाते। वह तो हमें जीवन में अभ्यास के परिणाम-स्वरूप आ गया है। माया किस प्रकार से हमें आवृत कर देती है, इसके दर्शन भी हमें अपने जीवन में ही होते हैं।

तब ही समझ आई कि भूल कहाँ हुई? -

- जीव ने अपने आप को तन मान लिया।

- तन को अपनाने के साथ-साथ, इस पूर्ण जग से पृथक अपनी सत्ता मानने लगा। जिससे जीव को यही अभ्यास होने लगा कि वह आप ही कर्ता है।

- माया ही बीज है जो रूप धर कर आई है।

माँ, आज आपकी कृपा से अपने दर्शन करते-करते सच ही समझ में आ रहा है। मैं जन्म-जन्म की मान्यताओं में फँसकर समझ रही थी कि मुझे ज्ञान आ गया है, यह तो केवल मेरा भ्रम ही था। आप सच ही पल-पल पर, कर पकड़ कर, यही समझाते रहे कि 'उठ और जाग'। मैं ही समझ न सकी। आप खेल-खेल में, मेरे स्तर पर आकर सब दर्शन करवाते रहे। जीवन की हर प्रकार की परिस्थितियों में सत्यता के दर्शन करवाते रहे।

आज आपकी उस साधारणता में ही विलक्षणता के दर्शन हो रहे हैं। अब समझ में आ रहा है कि आवरण कैसे मिटते हैं! कहाँ पे भूल हो जाती है! मैं मूढ़ा अपने सत्दर्शन करने पर भी झगड़ा करती रही और शब्दों में ही रमण करती रही। अब आपकी कृपा से यह समझ आ रही है कि जब तक अपने आवरण नहीं मिटेंगे, तब तक सत्यता के दर्शन नहीं होंगे।

आप हर पल साथ रह कर अपार कृपा का प्रसाद दे रहे हैं।

माँ, आप धन्य हैं!❖

वैदिक विवाह

परम पूज्य माँ

पूर्ण कुल
मिली
यज्ञ करें,
यज्ञ सफल
तब
होती है!

गतांक से आगे -

प्रतिज्ञा मन्त्र

ॐ समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ठी दधातु नौ।।

ऋग. मं १०/सू ८५/म. ४७१

अर्थ : हे सम्पूर्ण जगत के स्वामी तथा उपस्थित सज्जनो (हम दोनों को) समान रूप से निश्चय करके जानो (कि हम प्रसन्नता से मिलकर रहना स्वीकार करते हैं) हमारे दोनों के हृदय जल के समान शीतल, निर्मल और शान्त (मिले हुए रहें)। जैसे प्राण वायु (हमें प्रिय हैं) वैसे हम दोनों प्रसन्न (प्रिय रहेंगे)। जैसे धारण करने वाला परमात्मा (सबमें) मिला हुआ है और जैसे उपदेश करने वाला सुनने वालों से प्रीति करता है, वैसे हम दोनों (प्रेम को) धारण करें।

वर : यदि आप इस सम्बन्ध को जोड़कर हमें आशीर्वाद दें तो हम कृतार्थ होंगे।

ज्योति प्रज्वलित करके विवाह होम का आरम्भ

पूज्य माँ : ज्योत जले महाज्ञान की, राम की यह ज्योति है।
संग मिटाव की ज्योति यह, नाम की यह ज्योति है।।१।।

शास्त्रन् की ज्योति यह, यह कुल लाज की ज्योति है।
ज्योत को पहले देख तो ले, परम ब्रह्म की ज्योति है।।२।।

जीवन यज्ञमय बनाने को, हर कर्म समिधा होती है।
यह ज्योत जो इस पल है जली, सार्थक तब ही होती है।।३।।

समिधा सामग्री की नहीं कहें, समिधा जीवन होती है।
यज्ञमय गर हर कर्म हो, आहुति वह ही होती है।।४।।

पूर्ण कुल मिली यज्ञ करें, यज्ञ सफल तब होती है।
एक के बिन यह शास्त्र कहें, यहाँ यज्ञ सफल नहीं होती है।।५।।

गर सब मिली के क़दम धरें, तब जीवन यज्ञमय होती है।
गर सब मिली के धर्म करें, यह महान आहुति होती है।।६।।

इस ज्योत से ज्योति ले करके, ज्योतिर्मय जग होती है।
प्रेम ज्ञान और भक्ति की, योग इसी में होती है।।७।।

वर-वधू : १. आज आपके चरणों में बैठकर जो ज्ञान प्राप्त किया, उस ज्ञान से हमें पता चला कि गृहस्थाश्रम केवल दो व्यक्तियों के मिलन से नहीं बनता। कुल, मित्र, शरणागत, बुज़ुर्ग और बच्चे, जो भी सम्पर्क में आयें, उनके संग्रह को गृहस्थाश्रम कहते हैं। इन सबके प्रति प्रेम, उदारता तथा झुकाव से कर्तव्य निभाते हुए ही हम इस आश्रम को सफल कर सकते हैं। हे कर्तव्यपरायिणी तथा सुखदायिनी माँ! आज हम ब्रह्मचर्य वर्धक गृहस्थाश्रम में पदार्पण करना चाहते हैं।

२. आपके मुखारविन्द से जो ज्ञान सुना तथा आपके जीवन से जो ज्ञान का प्रमाण मिला, उसी पथ राही हम आपकी चरण रज से माँग भर कर सत् की ही ओर आना चाहते हैं। अब तक निहित रूप से हम व्यक्तिगत रहे हैं। आज हम भी गृहस्थाश्रम में सबके तद्रूप होकर अखिल दुःख विमोचक, सुख वर्धक रूप में रहना चाहते हैं।

३. पूर्ण कुल सम्बन्धी, सहयोगी तथा सहवासियों से भरपूर संसार ही हमारा आश्रम है। उसके ईंट, पत्थर, धरती, कण-कण, हर पत्ता, सभी हमारे अपने हों और हम सबके साथ मिलकर त्याग भाव से भोग करें, जैसे कि आपने अभी समझाया है।

पाणिग्रहण

वर : **ॐ गृह्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः।**
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वादुगार्हपत्याय देवाः।।

१. हे सौभाग्यवती! भागवत कृपा, देवता सहयोग तथा उपस्थित श्रेष्ठ गणों की आशीर्वाद पूर्ण अनुमति से जीवन पर्यन्त परम गुण रूपा सौभाग्य वृद्धि के लिये मैं तेरा हाथ ग्रहण करता हूँ।

वर : **ॐ भगस्ते हस्तमग्रभीत् सविता हस्तमग्रभीत्।**
पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तव।।

२. भागवत कृपा से पूज्य माँ का कर हमारे सीस पर है। भगवान के साक्षित्व में मैं तुझे अपनी पत्नी स्वीकार करता हुआ, तुम्हारी स्वीकृति तथा उपस्थित विद्वान जनों की अनुमति से मैं यह पावन गृहपति का स्थान ग्रहण करता हूँ।

वर : **ॐ अहं विष्यामि मयि रूपमस्या वेददित्पश्यन्मनसा कुलायम्।**
न स्तेयमझि मनसोदमुच्ये स्वयं श्रभ्रानो वरुणस्य पाशान्।।

३. गृहस्थाश्रम वृद्धि, गौरव, मान-मर्यादा तथा भागवत प्रियता वर्धन के लिये मैं इस देवी के रूप को अपने में समाहित करता हूँ।

वर-वधू : **ॐ अमोऽहमस्मि सात्वं सा त्वमसि अहोऽहम्। सामाह्यमस्मि ऋतवम् धौरह पृथिवीत्वम्। तावेव विवाहवहै सहरे तौ दधाव है। प्रजाम् प्रजन्यावहे पुत्रान् विन्दावहै ते जरदष्टयः। संप्रयो रोचिष्ण् सुमनस्यमानौ।**

४. परम पूज्य माँ! हम आपके साक्षित्व में एक दूसरे का हाथ थामते हैं। हमारी चाहनाएँ एक हैं, हमारा लक्ष्य एक है। आज से हमारा स्थूल, सूक्ष्म तथा सम्पूर्ण सर्वस्व एक है। हम धरती तथा आकाश सम मिले हुए एक हैं। ज्यों रक्त तथा तन का नाता है, त्यों हम एक होकर जीवन पर्यन्त रहें।

वधू : मैं आपके धर्म, अर्थ और काम का संरक्षण करूँगी। आप भागवत प्राप्ति अर्थ मुझे हर पग पर देवत्व तथा परम की ओर ले चलिए।

वर : तुम धर्म, अर्थ तथा प्रेम को निभा देना। आज से मैं तुम्हें हर क़दम पर परम मिलन और मोक्ष की ओर ले जाऊँगा। यह मेरी आयु पर्यन्त निभाने की प्रतिज्ञा है।

सप्तपदि

प्रज्वलित ज्योति के समक्ष तथा पूज्य माँ के साक्षित्व में वर-वधू वेद मंत्र आधारित प्रतिज्ञाएँ करते हुए सात पग चलते हैं।

१. अन्न

वर : माँ! मैं गीता के ३/१३*श्लोक को बहुत महत्वपूर्ण मानता हूँ तथा 'अन्न ग्रहण' के श्लोक को मूर्तिमान करना चाहता हूँ। आपकी अपार करुणा होगी यदि आप यह श्लोक यहाँ पर समझाएँ।

यज्ञ शिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।।

श्रीमद्भगवद्गीता ३/१३

पूज्य माँ : यज्ञशेष भक्षण करें जो, पाप विमुक्त हो जाते हैं।
अपने लिये पकायें खायें, तो पाप ही वो खाते हैं।।१।।

मुदित मनी हो सब को दें, सुख चैना वो पाते हैं।
उदारता करुणा हैं यज्ञशेष, पल में उदय हो जाते हैं।।२।।

आनन्द प्रेम रस सार जो, यज्ञशेष कहलाते हैं।
दैवीगुण हैं यज्ञशेष, खायें अमर हो जाते हैं।।३।।

तन से श्रम मन से प्रेम, अर्पित जग को करते हैं।
बुद्धि अन्न देई करी, वैराग्य पुष्टित करते हैं।।४।।

प्रथम पद लेते हुए

वर : **ॐ इष एक पदी भव - सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा।**
नयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टय।।

हे कोमल हृदया वधू! तू विशाल हृदयपूर्ण अन्नपूर्णा बने और सबको पावन अन्न दे। मेरे कुल, अतिथि तथा गृहस्थाश्रम संग्रह को उदार हृदय से हमारा अपना आप देने वाली बने, इसलिये मैं सारा स्थूल तुझे सौंपता हूँ। मेरा स्थूल तेरा हो गया।

वधू : मैं सबको सत्त्व अन्न खिलाऊँगी। आपके और हमारे गृहस्थाश्रम के लोगों की हर इन्द्रिय का अन्न आज से भागवत साक्षित्व से सत्मय होगा। तन, मन और बुद्धि, तीनों स्तर का अन्न, मैं अपने प्रेम से सींच कर उत्पन्न करूँगी।

२. बल

वर : माँ! गीता के आदेश अनुसार हमारा बल क्या है? यह मुझे विस्तारपूर्वक समझाइये।

पूज्य माँ : अभिमान अभाव दम्भ अभाव, अहिंसा क्षमा ही महाबल है।
संयम सेवा संग आर्जवता, पूजा श्रद्धा ही महाबल है।।१।।

कर्तव्य परायणता में जान, ममत्व अहम् रहितता बल है।
दुःख सुख में हो सम भाव, अनासक्ति भी महाबल है।।२।।

तत्व ज्ञान पे नित्य ध्यान, अनन्य योग महाबल है।
राग द्वेष रहितता में, छिपा हुआ पूर्ण बल है।।३।।

धन मान दुल्हन सों संग में, विपरीत पूर्ण बल है।
उनसे साचो प्रेम जो हो, वही सत् वर्धक सब बल है।।४।।

व्यक्तिगतता तो निर्बल है, तद्रूपता में पूर्ण बल है।
इक घर जानो निर्बल है, गृहस्थाश्रम में सब बल है।।५।।

द्वितीय पद लेते हुए

वर : **ॐ ऊर्ज्जे द्विपदी भव - सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा।**
नयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टय।।

मेरा सारा बल इस गृहस्थाश्रम में सबके लिए है। तू इस बल में मेरा सहयोग दे।

वधू : मर्यादा, श्री, झुकाव तथा अखिल संरक्षण ही तुम्हारा बल है, यह मैं समझी हूँ। इसमें मैं तुम्हारा पूर्ण सहयोग दूँगी।

३. धन

वर : हे अखिल विज्ञाता माँ! गीता और आपके अनुसार महाश्रेष्ठ धन कौन सा है?

पूज्य माँ : प्रेम समान कोई तप नहीं, कर्तव्य समान पूजा नहीं।
ज्ञान में दोनों समाए हैं, ज्ञान समान कोई दूजा नहीं।।१।।

महापावन पावनकर भी, अमर धन ऐसा कहाँ मिले।
जितना ख़र्चो उतना बढ़े, महा भीषण यह दुःख हरे।।२।।

शास्त्र धन के कोष जान, बुद्धि में सम्पद् भरे।
जीवन में नित धन बाँटो, जितना बाँटो उतना बढ़े।।३।।

पापी से पापी तर जाये, दैवी सम्पद् उत्पन्न करे।
आनन्द विभोरता पुंज यह, वा महिमा कौन गा सके।।४।।

तृतीय पद लेते हुए

वर : **ॐ रायस्पोषाय त्रिपदी भव।**
सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु।।

हे देवी! अपना पूर्ण धन मैं तुझे अर्पित करता हूँ। आज से उसका वर्धन, संरक्षण और उचित इस्तेमाल तेरे को सौंपता हूँ।

वधू : आपका धन ज्ञान, प्रेम और उदारता है। मैं अपने जीवन का हर श्वास इनकी ज्योति को अमर बनाने के लिए घृत की भांति अर्पित करती रहूँगी।

४. सुख

वर : माँ! सुख और तृप्ति किसमें हैं?

पूज्य माँ : निराश्रित है नित्य सुखी, आश्रित सुखी न हो सके।
सुखी जहान में तब ही हो, चाह रहित जो हो सके।।१।।

अपने प्रति हो उदासीन, सुख कभी नहीं बिछुड़ सके।
अक्रोध वैराग्य स्वतः उठे, मन शान्त ही तब रहे।।२।।

तृप्ति देने में होती है, सुख चैना उसमें बसे।
बहुत कमा और बहुत बहा, तू तृप्त रहे और सुखी रहे।।३।।

यज्ञमय जीवन में सुख है, संसार कुण्ड में यज्ञ करे।
प्रिय सुगन्धित निज समिधा, इस कुण्ड में अर्पित तू करे।।४।।

जितने दुःख तू मिटाएगा, उतना सुख तुझको मिले।
जितना सुख तू चाहेगा, उतना दुःखी तू हो जाये।।५।।

चतुर्थ पद लेते हुए

वर : **ॐ मयोभवाय चतुष्पदी भव।**
सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु।।

प्रत्येक वस्तु, परिस्थिति तथा जीवन के हर पहलू को सबके लिए सुखमय बनाना मेरा जीवन तथा उद्देश्य है। मैं अपना यह पहलू तुझे अर्पित करता हूँ।

वधू : अपना जीवन यज्ञमय बनाते हुए मैं आपके पहलू का आपके लिये संरक्षण और उपार्जन करूँगी।

परम पूज्य माँ की अध्यक्षता में, अर्पणा प्रांगण में सम्पन्न, वर-वधू ज्योत और शास्त्रों के साक्षित्व में वेद-मंत्र आधारित प्रतिज्ञाएँ लेते हुए...

५. संतान

वर : माँ! सन्तान किसे मानूँ?

पूज्य माँ : नन्हें शिशु! भगवान ने कहा है -

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः। (गीता १५/७)

गृहस्थ आश्रम का पति है तू, पूर्ण आश्रम यह तुम्हारा है।
सब कुल सन्तान ही है तेरी, पोषण कर्तव्य तुम्हारा है।।१।।

हर जीव भागवत अंश जान, हर जीव ही उन को प्यारा है।
इन नाते तू मन में ठान, हर ही जीव तुम्हारा है।।२।।

अधिकार किसी पर मत रखना, भगवान का ही यह पसारा है।
वह तेरे नहीं तू उनका है, इसी में ज्ञान तुम्हारा है।।३।।

द्वार तेरे कभी बन्द न हों, कर भी कभी न बन्द करना।
क्षमा करुणा धैर्य प्रेम, बन के नित्य बहा करना।।४।।

पञ्चम् पद लेते हुए

वर : **ॐ प्रजाभ्यः पञ्चपदी भव।**
सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु।।

प्रत्येक वस्तु, परिस्थिति तथा जीवन के हर पहलू को मैं सबके लिए अर्पित करता हूँ। हर जीव, जो मुझे पुकारता है, वह मेरे लिये संतान के समान है। मेरा कुल भगवान का कुल है। इन पर आशीर्वाद का हाथ रखना तुम्हारा धर्म है।

वधू : जिस पर भी आपकी दृष्टि जाएगी, वह मेरे से प्रेम, वात्सल्य, क्षमा तथा सहिष्णुतापूर्ण आशीर्वाद ही पाएगा।

६. ऋतु

वर : माँ! प्राकृतिक ऋतु से क्या तात्पर्य है?

पूज्य माँ : ऋतु आये ऋतु जाये नन्हें, मौसम बदलते रहते हैं।
ऋतु समान सब जीव जहान के, पल पल बदलते रहते हैं।।१।।

कभी उष्णता हो क्रोध की, ठुकराव सर्दी को कहते हैं।
कभी दया प्रेम की बग़िया खिले, बसन्त ऋतु उसे कहते हैं।।२।।

प्रेम की वर्षा बह जाये, हरियाली के चिन्ह आते हैं।
कठोर उष्णता क्रोध बाढ़, केवल पामाली बढ़ाते हैं।।३।।

ये आने जाने मौसम हैं, ये आते जाते रहते हैं।
जो भागवत देन सबको समझे, वह नित्य मुदित ही रहते हैं।।४।।

षष्टम् पद लेते हुए

वर : **ॐ ऋतुभ्यः षष्टपदी भव।**
सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु।।

पूज्य माँ ने कहा, जीवन ऋतु के समान तथा नाभि चक्र के समान बदलता रहता है, इसमें नित्य उतराव और चढ़ाव होता रहता है। क्या उनके साथ निभा सकोगी?

वधू : ज्यों ऋतु के सहज स्वाभाविक निजी गुण होते हैं, त्यों जीव के भी सहज स्वाभाविक गुण हैं। मैं आपके कथनानुसार हर ऋतु के अनुकूल आपके गृहस्थ आश्रम, आपके जहान और आप से व्यवहार करूँगी।

७. साख्य भाव

वर : माँ! साख्य भाव का हमारे जीवन में क्या अर्थ है?

पूज्य माँ : प्रेम जहाँ पर रहता है, वहाँ साख्य भाव ही रहता है।
पराया वहाँ पर कोई नहीं, सब अपना ही रहता है।।१।।

गृहस्थ आश्रम में जानो, कोई दुश्मन नहीं रहता है।
आश्रम सबका गृहस्थ है, हर जीव उसे अपना कहता है।।२।।

द्वेष दूजों से होता है, अपनों से नहीं रहता है।
जब हर ही गुण है घर का गुण, तब द्वेष वहाँ नहीं रहता है।।३।।

दुश्मन भी मित्र ही होते हैं, वह तो सच ही कहते हैं।
जो अपनी न्यूनता दर्शाएँ, क्यों उनको दुश्मन कहते हैं।।४।।

भला बुरा कभी न कहना, यहाँ सब अपने ही रहते हैं।
जहाँ सबके लिये ही सब जीयें, आश्रम उसे ही कहते हैं।।५।।

गिले शिकवे कभी न रखना, दुर्गन्ध देय इनको कहते हैं।
प्रेम बहे नित्य नयनों से, सुगन्ध उसे ही कहते हैं।।६।।

सप्तम् पद लेते हुए

वर : **ॐ सखे सप्तपदी भव।**
सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु।।

मैं किसी का दुश्मन नहीं, मुझे किसी से गिला शिकवा नहीं। मुझे जो मिला, भगवान ने दिया है। चाहे भला दिया, चाहे बुरा दिया, सब भगवान की करुणा है। सबसे मित्रता मेरा जीवन है। क्या इसमें साथ निभाओगी?

वधू : हे प्रेम के देवता! मैं भगवान के साक्षित्व में अपना मन और मनो राग-द्वेष इस ज्ञान निधि की अमर ज्योति में अर्पित करती हूँ। अब केवल आपका मनोभावन अखिल साख्य ही मेरे मन में सर्वोत्तम जगह रखेगा।

इसके पश्चात् वर वधू की माँग में सिन्दूर भरते हुए

वर : आज तेरी माँग में मैं अपनी माँग भर रहा हूँ और आशा करता हूँ कि हम दोनों सजातीय, एक पथ पर चलते हुए एक ही लक्ष्य पर पहुँच सकेंगे। जन्म-जन्म के कर्म फलस्वरूप तथा भागवत कृपा से इस जीवन में आज मैंने अपनी जीवन संगिनी के रूप में सत्यप्रिय, कोमल हृदया तुझको पाया है। मैं इसे अपना अहोभाग्य मानता हूँ। तुम्हारी माँग भर के मैं इतना ही माँगता हूँ कि यदि कभी मैं सत्यपथ भूलूँ तो मेरा नाम रूपा मंत्र मुझे सुना देना। इस पथ में यदि तुम सहयोग देती रही तो भागवत् कृपा से हमारा योग पूर्ण हो जायेगा।

वधू : मैं यदि आपको नादानी में कुछ कह बैठूँ, तो आप मेरे साथ नाराज़ मत हो जाना। मेरे पास आप जैसा ज्ञान और अनुभव नहीं, लेकिन मैं जो कुछ भी कहूँगी, इसी आपकी माँग को शिरोधारण करके कहूँगी। मुझे जितनी समझ आई है, मैं आपकी इस माँग को पूर्णतयः शिरोधारण करती हूँ। भगवान करें आपने जो मेरी माँग भरी है, वह सदा अमर हो।

प्रार्थना

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्त। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।।

पूज्य माँ : मर्यादा पुरुष पुरुषोत्तम, परम तत्व प्रमाण राम।
नतमस्तक हो कर जोड़ी, हम दोनों करें तुझे प्रणाम।।१।।

गंगा यमुना मिलन संग, सहयोग का दो वरदान राम।
उमंग तरंग लक्ष्य भरी, रक्षण करो तुम हमरो राम।।२।।

तोरे नाम की लाज रहे, भक्ति में शक्ति तुम दो राम।
तेजोमयी तेरा ज्ञान भये, इतनी कृपा तुम कर दो राम।।३।।

साथ रहें सब साथ करें, हमरा सहारा तुम हो राम।
द्वेष कबहुँ भी उठे नहीं, तव चरणन् में ही हो विश्राम।।४।।

गृहस्थाश्रम को करुणापूर्ण, आलिंगन में ले लो राम।
प्रेमपाश में बँधे रहें, हिय में बसे गर तेरा नाम।।५।।

अमर ज्योति के याचक हम, अमर तत्व हम माँगें राम।
लक्ष्य तुम्हीं और पथ भी तुम्हीं, तुम से तुम को माँगें राम।।६।।

वधू शृंगार

वधू के कण्ठ में मंगल सूचक मौली पहनाते हुए

पूज्य माँ : दैवी आभूषण मौली में, इनका शृंगार गर होये।
लाल में पीत है रंग भरा, तत्व विस्तार तब होये।।१।।

दर्शन में हो रजोगुणी, मन पीत रंग संन्यासी होये।
अपने प्रति हो उदासीन, प्रेम सफल तब ही होये।।२।।

पितु लाज तोरा काजल हो, करुणा का सुरमा अब होये।
प्रेम की लाली चढ़ी रहे, शृंगार सफल तब तव होये।।३।।

मृदुल भाषी धृति क्षमा, कुल लाज स्मृति हिय होये।
मेधावी तव बुद्धि हो, आभूषित नन्हीं तब होये।।४।।

लाली के दर्शन होते हैं, जीवन अग्न रंगी होये।
बाह्य शृंगार लाख करो, मन वैरागी ही तव होये।।५।।

प्रेम समान कोई तप नहीं, ज्ञान महा पूजा होये।
है यही शृंगार यह आशीर्वाद, तोरा गुण शृंगार अमर होये।।६।।

योग सम्पन्न

वर : **ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तम् ते चित्तमस्तु।**
मे वचनं एकमनं जुषस्व।

वर-वधू : **प्रजापतिष्ट्वा नियुन्क्त मह्यम।**

वर : परम पूज्य माँ! हमारा यह पारस्परिक योग जीवन पर्यन्त रहे और नित्य भगवान के साक्षित्व में भगवान के पथ पर ले जाये। हे माँ! आप शुभ आशीर्वाद दें कि हमारी आत्मा और हृदय एक हों।

पूज्य माँ : राम चरण दामन फैला, नतमस्तक हो बिनती करो।
श्वास श्वास से बार बार, भगवान से यूँ ही कहा करो।।१।।

गंगा से यमुना मिले, मिल करके बहें दोनों।
पृथक् पृथक् न हो सकें, इक धारा बनें दोनों।।२।।

मन मिले यूँ ही मन से, इक बुद्धि होयें दोनों।
आत्म से आत्म मिले, इक प्राणा भयें दोनों।।३।।

एक क़दम हो एक धाम अब, एक नाम ही हो दोनों।
एक लक्ष्य हो एक ही पथ, एक ही हों अब से दोनों।।४।।

शान्ति! शान्ति! शान्ति!

❖ ❖ ❖

जीव के कर्म की तुला गर गीता है,
जीव के कर्मों का न्याय करने वाली गर गीता है,
तो जीव का कर्तव्य क्या होगा?

शास्त्र अनुकूल जीवन ही कर्तव्य है। गर जीवन शास्त्र अनुकूल नहीं तो जीवन धर्म विरुद्ध है। धर्म विरुद्ध जीवन ही कर्तव्य-विहीन जीवन है।

- **गीता कथित कर्तव्य क्या होगा**?
- **उसका मूल क्या होगा**?

हमें इसे समझ लेना चाहिये!

यह समझने के प्रयत्न करें कि गीता कथित कर्तव्य करने के लिये,

मौलिक दृष्टि,

गुण और

बुद्धि कैसी होनी चाहिये!

जीवन में व्यावहारिक स्तर पर कर्तव्य करने के लिये भी गीता के आदेश का अक्षरशः अनुसरण करना अनिवार्य है -

गीता सारांश :

भगवान कहते हैं कि -

- आत्मवान बनने के प्रयत्न करो।
- योग-युक्त होने के प्रयत्न करो।
- योग राही परम से समत्व पायेगा।
- स्थितप्रज्ञ बनने के प्रयत्न करो।
- यज्ञमय कर्म करो।
- कर्म करो पर फल की चाहना छोड़ दो।
- संग छोड़ दो
  और कामना रहित हो जाओ।
- समदर्शी हो जाओ।
- क्रोध, लोभ, द्वेष को छोड़ दो।
- सर्वसंकल्प परित्यागी हो जाओ।
- मान-अपमान, सुख-दुःख में सम रहना सीख लो।
- मित्र वैरी के प्रति समभाव वाले हो जाओ।

- निष्काम कर्म करना सीख लो।
- ज्ञानी भक्त सर्वोत्तम जीव है, तुम भी वही बनो।
- निरन्तर भगवान की शरण में रहना सीख लो।
- निरन्तर भगवान के साक्षित्व में रहना और निरन्तर उनका स्मरण करना सीख लो।
- सनातन परम पद को लक्ष्य बना लो।
- अनन्य भक्ति द्वारा उसे पा सकते हैं, इस कारण अनन्य भक्त बनो।
- केवल भगवान में चित्त टिकाने का प्रयत्न करो।
- दैवी गुणों का अभ्यास करो और भगवान के लिये जीना सीखो।
- सर्वभूतों के प्रति निर्वैर बनने के प्रयत्न करो।
- निर्मम, निरहंकार और क्षमावान बनने के प्रयत्न करो।
- नित्य संतुष्ट हो जाओ।
- पुनः पुनः दैवी गुण की कहते हैं, इन्हें अपने में लाने का अभ्यास करो।
- औरों पर अधिकार न जमाओ, उन्हें स्वतंत्र रहने दो।
- औरों की मान्यता भंग न करो।
- सर्वभूत हितकर बनो और यह जान लो कि गुण गुणों में वर्तते हैं।
- अपनी बुद्धि को दूसरों के गुणों से या अपने गुणों से प्रभावित न होने दो।
- मोह को छोड़ दो और सत् में श्रद्धा रखो।
- भगवान के समान, परम धर्म वाले बनो।

क) यही हर जीव का कर्तव्य है।
ख) यही हर जीव की तुला है।
ग) यही भगवान का स्वरूप और रूप है।
घ) यही ब्रह्म का विधान है और इसे ही जीवन में लाना चाहिये।
ङ) यही जीवन में प्राप्तव्य है और यही बनने की विधि ज्ञातव्य है।
च) यही अध्यात्म है।

अन्य सब अज्ञान है और कर्तव्य-विहीन है। बिन ये गुण पाये कर्तव्य हो ही नहीं सकता। कर्तव्य दूसरे के लिये होता है। कर्तव्य भगवान का जीवन है। कर्तव्य ही सेवा और प्यार है। सब शास्त्र हमें जीवन कर्तव्य ही बताते हैं -

गर तेरा पूजन इसमें हो, नित गीता का अध्ययन करूँ।
अब इतनी कृपा कर दे श्याम, बिन पाठ किये उठ न सकूँ।।
वाणी से गीता बहे, मन गीता में ही रंगा रहे।
आशिष इतनी दे पिया, मन तेरे भाव में रंगा रहे।।❖

अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भागवद्गीता' १६/२४ में से उद्धृत

मंनै पावहि मोखु दुआरु...

(भगवान की बात मानने से जीव मुक्ति का द्वार पा लेता है)

परम पूज्य माँ के साथ सुश्री छोटे माँ एवं श्रीमती देवी वासवानी,
जिनके विनीत आग्राह पर 'जपुजी साहिब' के इस विस्तार का दैवी प्रवाह बह निकला...

गतांक से आगे - **(अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से)**

पौड़ी १५

मंनै पावहि मोखु दुआरु।
मंनै परवारै साधारु।
मंनै तरै तारे गुरु सिख।
मंनै नानक भवहि न भिख।
ऐसा नामु निरंजनु होइ।
जे को मंनि जाणै मनि कोइ।।१५।।

शब्दार्थ : भगवान की बात मानने से जीव मुक्ति का द्वार पा लेता है, उसको मानने से (मनुष्य अपने) परिवार को सुधार देता है। (शास्त्र की बात) मानने से गुरु आप तो (भव सागर से) पार होता ही है और शिष्यों को भी पार लगाता है। हे नानक! (नाम को) मानने से (जीव संसार में विषयों की) भीख

माँगने के लिये नहीं भटकता फिरता। परमात्मा का नाम ऐसा निरंजन होता है, जो कोई उसको मन में मान लेता है, वही उसको जानता है।

पूज्य माँ :

श्रद्धा पूर्ण विश्वास हुआ, गर जीवन में यह उतर गया।
जो गुरु कहा हर वाक् का, गर रंग मुझी पर चढ़ गया।।१।।

ढंग मेरा गर बदला, तव ढंग वहीं पे उतर गया।
द्वार तेरे पे आ सकूँ, गर जीवन पावन ही भया।।२।।

गर मानूँ तेरी बात मैं, कहोगे कुल सुधर गया।
वृत्ति समूह ही कुल मेरा, बुद्धि में वह उतर गया।।३।।

मौन रूप उस धर लिया, चरण तेरे वह आ पड़ा।
क्या कहते हो नानका, तब कहूँगी द्वार तेरा खुल गया।।४।।

जो नाम ले और नाम दे, वह स्वयं तरे दूजा तारे।
गुरु का नाम भी वह गाये, सबको ही तब वह तारे।।५।।

कोई तरे न तरे मुझको क्या, मुझको नाम ही लेना है।
जो मेरा नहीं मैंने अपनाया, वह चरणन् में ही देना है।।६।।

गुरु की सीख ही तारे है, मेरे गुरु अपने आप कहो।
शरण में अब रहने दो, मेरे तारक तुम ही तो हो।।७।।

निरंजन एक रे तुम ही हो, तुमसे अंजन मिल जाये।
निर् अंजन मेरा नयन भये, आकृति हृदय में बस जाये।।८।।

तेरी ही बस छवि रे हो, नानक नानक निरखा करूँ।
मन के अनेकों बल छल जो, तेरे चरणन् में पल में धरूँ।।९।।

पूरा कुल, कुल का कुल, जो मन में मेरे छाया है।
'मैं' के कारण संग कारण, मोह ने ही वह बसाया है।।१०।।

ओ नानका मैं तुझे कहूँ, तेरी बात नहीं मान सकूँ।
क्या करूँ कैसे करूँ, 'मैं' तो तेरे चरण में पड़ सकूँ।।११।।

चरणन् की गर धूल मिले, मेरी पूर्ण भूल मिटे।
इक बेरी गर शरण मिले, नानक नाम तेरा मिले।।१२।।

जन्म मरण से तर जाये, भिक्षा जग में क्या माँगूँ।
नाम के जो गुण गाये, वैसा मन तुझसे माँगूँ।।१३।।

ओ नानका ओ नानका, इतनी तू अज कर दे कृपा।
तेरा नाम ही लिया करूँ, इतना अब कुछ तू कर जा।।१४।।

हृदय में नाम बसाया जिसने, चरण में सीस झुकाया जिसने।
नाम ही केवल पाया जिसने, अपना आप भुलाया जिसने।।१५।।

जो तुझे माने वह तेरा भये, नाम निरंजन मल हरे।
दुःख विमोचक नाम तेरा, मल विमोचक नाम भये।
पावनकर विपद् विनाशक, नाम तेरा है दयानिधे।।१६।।

बस नाम ही माँगूँ मोक्ष न माँगूँ, उध्दार न माँगूँ ज्ञान न माँगूँ।
करुणा पूर्ण करुणा कर दे, मैं तो केवल नाम तेरा माँगूँ।।१७।।

मेरे नानका तू कर दया, इतनी झोली मेरी भर दे।
और कछु न माँगूँ तुझसे, नाम भरपूर मन कर दे।।१८।।

रहम कर मेरे सरकार, मिले तेरा दीदार।
बस इतनी मेहर कर दे, मेरे परवरदिगार।।१९।।

रहम दिल दिलदार, झोली मेरी भर दे।
करुणा पूर्ण सरकार, आई तेरे द्वार, इनायत तू कर दे।।२०।।

हो जाये तेरा दीदार, चरणों से हो मुझे प्यार।
इतनी नज़र भर दे, इतनी नज़र भर दे।।२१।।

इनायत तू कर दे, इतनी नज़र भर दे।
तेरे चरण से हो मुझे प्यार, इनायत तू कर दे।।२२।।

तू तो है दिलदार, दरियादिल है सरकार।
इनायत तू कर दे, करुणानिधि मेरे महाराज।।२३।।

दया का है भण्डार, तू झोली मेरी भर दे।
इनायत तू कर दे, इनायत तू कर दे।
नानक मेरे सरकार, इनायत तू कर दे।।२४।।

वहाँ पर :-

न जात पात न नाम धाम, न धर्म कोई न श्रुति ज्ञान।
धर्म एक हर भक्त का, अपना सम्बन्ध तू अब जान।।

भक्त बन्धु भक्त मित्र, भक्त ही संसार भये।
परम के नाम में जो है मग्न, वा शरण में जाये पड़े।।

क्रमशः

प्यार कुछ माँगता नहीं...

देता ही देता है!

श्रीमती पम्मी महता

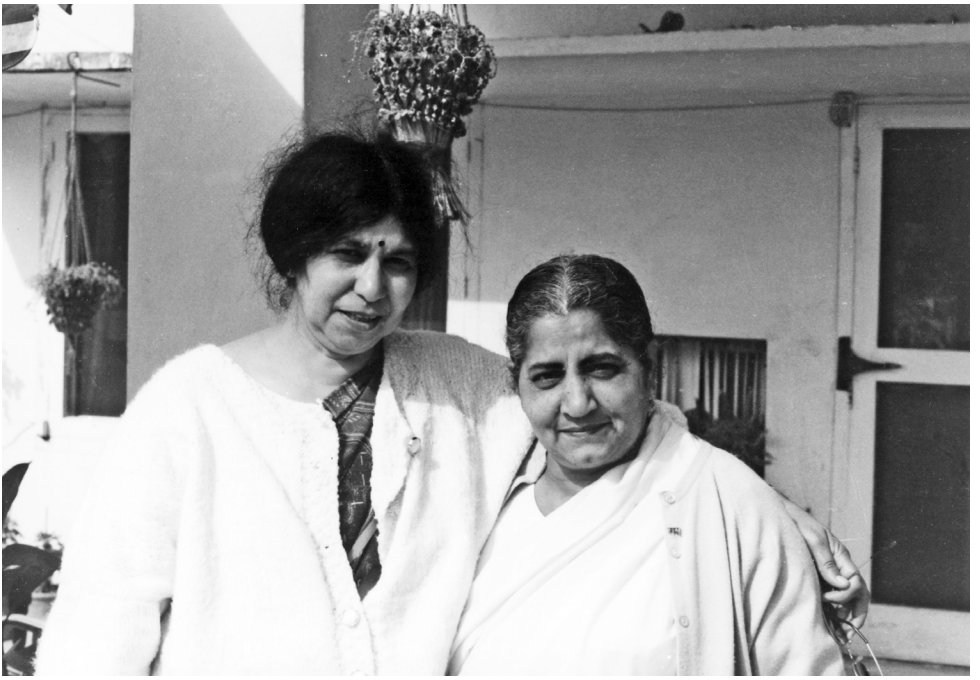

पूज्य सुश्री छोटे माँ के श्रीमती पम्मी महता

परम पूज्य श्री हरि माँ से पाया, जीवन का दिव्य प्रसाद, अपने आप में उनकी अपरम्पार महिमा का सार है, जो किसी भी जीवन में या उस के किसी भी पहलू में जब दस्तक देता है तो आंतर में प्यारी सी हलचल होती है! आंतर आत्मविभोर हो उठता है... क्योंकि सद्‌गुरु वेश में श्री हरि प्रभु जी जगती पर अपनी करुण कृपा की अनन्त बौछार करने स्वयं धरा पर अवतरित हो जाते हैं!

याद आता है, जब श्री हरि जगद्‌जननी माँ ने मेरे मोह-ममता के उस पहलू को छेड़ा जहाँ लगाव और ममता हो तो सुख-दुःख का होना स्वाभाविक ही है। इसी से ही आंतर में वह दर्द व ख़ुशी महसूस होती है।

याद पड़ता है, जब आप माँ ने मुझे कहा, "तू बच्चों से मोह करती है।" मुझे मोह और प्यार का भेद तब पता नहीं था। मेरे लिए इस सत्य को स्वीकार करना सहज नहीं था। क्योंकि मुझे इतना ही पता था कि प्यार तो प्यार ही होता है! मैंने कहा, "माँ! मैं तो प्यार करती हूँ।"

आप माँ ने इसे मेरी धृष्टता न मान, मुझे बड़ी ही सहजता से बताया कि, "भगवान जी के रास्ते पर चलने वाले को मोह-ममता का त्याग करना पड़ता है। इसलिए, क्योंकि प्यार कुछ माँगता नहीं! देता ही देता है! देने की भी बात नहीं, वह तो अपने आपको व अपना सभी कुछ, सभी में बाँटता ही चला जाता है!"

सद्गुरु जो अनुभवी है, वह तो अपने जीवन का सारांश बाँटता है। इसी लिए माँ, आपके जीवन की सच्चाई हृदय को छू जाती है... व हृदय में पूर्णतया बस जाती है! वहाँ तो संशय की गुँजाइश ही नहीं रहती। आपका वाक् तो ब्रह्म वाक् है। असीम श्रद्धा से आपकी वाणी को सच्चे व सुच्चे हृदय से उठाने की चाहत जाग जाती है! सच ही आपका जीवन कितना प्रेरणादायक है, माँ!

इसीलिए तो जिज्ञासु की तरह, आप माँ को सुनने व आपके अनुभवों को धारण करने की इच्छा जागृत हो जाती। आप ही की कृपा से बहुत ही आश्चर्यचकित हुई, आपको निहारती रहती व आपकी जीवनिया का विस्तार कागज़ों पर उकेरती रहती। जो भी आप कहतीं माँ, उसे उसी पल याद रखना असम्भव ही होता!

ज़ाहिर है, जीवन में इस तरह जीने का दृष्टिकोण न तो कभी देखा था, न ही सुना था। इसी लिए आपके प्रति मेरी जिज्ञासा निरन्तर बढ़ती जाती, बढ़ती जाती व बढ़ती ही जाती...

चुपचाप, ख़ामोश मन से आप माँ को सुनना बहुत ही अच्छा लगता। सच ही तो है न माँ, जो दिल को भा जाता है, उसे कोई कैसे नकार सकता है! हर होनी में, आप ही आप व आपका कृपा प्रसाद ही मुझे दिखाई देता। आप माँ का हर शब्द मिठास से भरा होता। प्रेरणा का स्रोत होता।

ज्ञान देने और जीवन-ज्ञान देने में कितना अंतर होता है; यह तो वह एहसास है जो आपके श्री चरणन् में बैठ कर ही महसूस होता है व आनन्दित करता जाता है। ज्ञान की शुष्कता और जीवन-ज्ञान में भेद नज़री आने लगता है। यह अनुभव भी तो माँ, आप ही का कृपा प्रसाद है!

इतना ही नहीं, और साथ ही साथ जीवन में जी पाने के इस अनुपम ज्ञान-विज्ञान को; जीवन में ढालने के लिए, आपने कितने प्यार से छोटे-छोटे आदेश देने शुरु कर दिये। इतने Playway (खेल-खेल के) ढंग से आप कहतीं कि सच ही मुसकुराते हुए व तहेदिल से उठाने को जी चाहने लगता।

जीवन में उसी तरह जी पाऊँ, जैसा आप कहतीं - क्योंकि लगने लगा यही जीना वास्तव में जीना है। यह अंदाज़े-बयां व रूबरू खड़ा आपका व्यक्तित्व इतना प्रभावित करता कि उसे उठाने को जी करता। बहुत ही प्यारी अदा थी, जो मेरे आंतर में घर करती जा रही थी...

शब से सहर तक आप ही आप में डूबे रहने के सिलसिले शुरु हो गये! अद्‌भुत व सुन्दर मूर्त्त बनी, आप मेरी आँखों में उतर हृदय में बसने लगे। उठते-बैठते, सोते-जागते आप ही आप मुझे नज़री आते। कब सहर शब में ढल जाती और शब सहर में, कुछ भी पता नहीं चलता था। आप ही आप मुझे आंतर-बाहर नज़री आने लगे।

आपने शब्दों में न कह कर, उसे मेरे जीवन का ऐसा सुन्दर पहला क़दम बना दिया कि वहीं से आपकी रहगुज़र पर चलने का परम सौभाग्य, आप परम वन्दनीय परम पूज्य श्री हरि जगद् जननी माँ से इस कनीज़ को मिल गया।

जब भी अवसर मिलता आपके क़दमों में आने का, उससे चूकती नहीं थी। क्योंकि जानने लगी थी, आपकी हर अदा ने मुझे इस क़दर लुभा लिया है कि पीछे मुड़ कर देखने की गुँजाइश ही नहीं रहने दी थी आपने। सच कहूँ, तो आपने यह जो पहला क़दम मेरे लिए उठाया, कि इन्हीं आपके क़दमों में अतीव पूज्य भाव से सदा-सदा के लिए बिठा ली गई।

हे श्री हरि परम पूज्य माँ, आप का कोटि-कोटि धन्यवाद है, जिन्होंने अपने से नवाज़ कर मुझे धन्य-धन्य करना शुरु कर दिया। सच कहते हैं, जिस पर प्रभु जी की निगाहे-करम हो जाये वह धन्य-धन्य हो जाता है। हे श्रीधर, आपने मुझे बड़े ही प्यार से सभी में बाँटने का यह प्रथम पाठ पढ़ाकर, जीवन मेरे को अपनी अनमोल दौलत से नवाज़ना शुरु कर दिया।

धन्य भाग्य मेरे, जो आप स्वयं मेरे जीवन में उतर आये। एक बड़ा ही सादगी भरा संदेश था, आपकी वाणी की सत्यता के पीछे! आपने ठीक फ़रमाया था कि, "जीवन में जो भी अच्छा लगता है, उसे सभी में प्यार से बाँटने से उसका आंतर में विस्तार होने लगता है। इस लिए वही शुरु कर दो सभी के लिए!"

आपका कहा याद पड़ता है कि, "उत्तर की तरफ़ चल पड़ो, दक्षिण स्वयं छूट जायेगा।" कितनी अनमोल व प्रिय देन थी, इस कनीज़ के जीवन को आपकी! तभी तो आपके प्यार की इस परिभाषा का जादू चलने लगा। मन आनन्दित हुआ रहता और आंतर में एक हल्कापन महसूस होने लगा... आपके प्यार ने सभी से यूँ जोड़ कर अपने-पराये के भेद को मिटाना शुरु कर दिया। कैसा effort less effort था! तभी तो इसे जीवन में कभी विराम नहीं मिला!

यह तो परम सौभाग्य था मेरा, जो आपके प्रति तहेदिल से नमन होने लगा। आप श्री हरि माँ ने जीवन के हर पहलू में क़दम धर कर, स्वयं से इस कनीज़ को अपने से बाबस्ता कर दिया। सच माँ, आपके इस दिव्य प्रसाद ने कैसे-कैसे रंग भरने शुरु किये कि सभी रंग एक होकर आपके प्यार के रंग में जा विलीन होने लगे।

किस क़दर आश्चर्यचकित हुई जाती और आत्मविभोर हो उठती - हृदय से निकलता वाह गुरु, वाह! धन्य हैं आप व आपकी अपरम्पार महिमा, जिसका विस्तार सामगान की तरह इसके आंतर में विस्तार पाने लगा। आप ही आपके प्यार से सराबोर हुई रहती। हैरतज़दा हो जाती, यह देख कर कि कैसी अनमोल दौलत है आपकी, जिसे ख़र्चों तो बढ़ती ही चली जाती है व आत्मविभोर करती हुई आनन्दित भी करती जाती।

कैसे, हे प्रभु माँ, आपके यह मधुर स्वर हृदय-वीणा पर सधने लगे! पुराने तार टूट-टूट कर गिरने लगे। कब और कैसे? इनके गिरने की आहट सुनाई न देती मगर नई तारें स्वतः ही झंकृत होने लगीं! इन नवनिर्मित तारों में आप ही का सुमधुर संगीत झंकृत होने लगा। कितना आंतर मन को सुकून मिलता!

मन्दिर में परम पूज्य माँ के सहज प्रवाह (उर्वशी) को लेखनीबद्ध करते हुए, सुश्री छोटे माँ...

कैसे-कैसे आपकी दिव्यता मेरे आंतर में रंग भरने लगी। इस निराली छटा से चित्त उठता ही नहीं था। आप माँ की इस गरिमा का सौंदर्य, इस आपके अपनाये हृदय को गौरवांवित करने लगा। आपका अनूठा प्यार मेरे शुष्क हृदय को प्यार की नमी से भरने लगा। क्या कोई ऐसे अनमोल शब्द हैं, जो आप भगवन का धन्यवाद कर सकें! यह तो वह एहसास है, जो मूक है और आपके क़दमों में मूक प्रणाम देता है! स्वीकार लीजिये अपना दिया ही स्वयं, इतना ही विनम्र निवेदन है आपसे।

आपकी कृपायें भी निरन्तर बरसने लगीं मुझ पर... आपने कहा कि, "गर तुम मुझे जानना चाहती हो, तो जाओ, पूज्य छोटे माँ के चरणों में बैठ जाओ। वही मेरे बारे में सभी बता पायेंगी तुझे!"

यह तो मैं जानती थी कि पूज्य छोटे माँ सदैव आप ही के साथ हे श्री हरि माँ रहीं और आपका जब यह सहज प्रवाह (उर्वशी) आंतर से बहना शुरु हुआ तो छोटे माँ ने ही इसे लेखनीबद्ध किया। इस आपके गंगावत् बहे प्रवाह को तो वही लेखनीबद्ध कर सकता था, जिसके पास लेख सिद्धि हो।

आज इतने शास्त्रों को केवल पूज्य छोटे माँ ने ही तो लिख कर जगती को आपकी यह धरोहर सौंपी है। आपके इतने करीब रह कर इसका हर अनुभव भी लिया। ऐसे महानुभवी के जीवन का यूँ साक्षात् करना व उसको इतने करीब से देखना व उनके दिव्य दर्शन करना, आप श्री हरि माँ का असीम अनुग्रह ही तो था उन पर! धन्य-धन्य हो गये छोटे माँ! और हमें भी हृदय-दामन में भरने के लिए यह अलौकिक दिव्य प्रसाद पाने का परम सौभाग्य उनके राही मिला।

हे भारत भूमि तू धन्य है जो मानस की जात के उत्थान के लिए माँ आपने इस धरा पर अवतरित होने का असीम अनुग्रह हम सभी पर किया। यही तहेदिल से दुआ है व प्रार्थना है करबद्ध आपसे कि हम सभी आप ही आपके जीवन का अनुसरण करते हुये आप ही में जा विलीन हो जायें...

हे पुजारी मन, तू तो परम पूज्य माँ की धरोहर है। उनका मन मन्दिर है! बस इन्हीं श्री हरि चरणन् की चाकरी करता जा निःस्वार्थ भाव से। श्रद्धा, भक्ति-भाव से, असीम अदब व प्यार से तथा माटीवत् जीते हुये इन्हीं जगती रूपा श्री चरणन् की सेवा में विलीन हो जा।

भगवान जी ने अपने हाथों से यह अवसर दिया है तुझे। इसे हृदय से उठाये रखना व उनकी अमानत को सहेजे रखना। यह अपने आपमें मुकम्मल है। इसकी मुकम्मलता को कोई भी आंच न आने देना।

युगों-युगों तक जो रहगुज़र आपने बनाई है अपने क़दमों से, इन्हीं क़दमों की माटी सीस लगाते हुये आप ही आप से मंगल याचना करती हूँ - हे ईश, इस पर कृपा बनाये रखियेगा जो यह मन की न सुन कर केवल अपने हृदय की ही सुने - क्योंकि इस हृदय में आपका वास है और आपका निवास स्थान भी है। इसलिये यह सदैव आप श्री हरि माँ की ही सुनता रहे। चिन्तन व मनन करता रहे तथा आप ही का कहा धारण करता रहे।

जानती हूँ यह स्वयं कुछ नहीं कर सकता जब आप ही करन कारण हैं। आप ही अपनी मेहर बनाये रखियेगा। आपके बिना तो यह कुछ भी नहीं। आप हैं तो यह 'मैं' कहाँ रह पायेगी इसी परम सत्य में अपनी इस कनीज़ को स्थिर कर लीजियेगा। मेरी यही याचना व विनीत प्रार्थना स्वीकार कर लीजियेगा। यह आपका इस पर असीम अनुग्रह होगा हरि ॐ ❖

जो मिले वा देन जान,
वा रज़ा में वह चले!
चाहना आपुनो कहाँ रहे,
गर सत्यता यह देख वह ले!

पिता जी : जीव जो सत् से प्रीत करता है वह यह जान लेता है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड सत् की रचना है और कर्मफल का परिणाम है। कोई राजा बना, रंक बना किसी को दुःख मिला और कोई लुट गया। ऐसा फल तो कोई नहीं चाहता था। जो जीव यह जान कर मान लेता है कि यह राम का न्याय है - उसका मन शांत हो जाता है। जीव अपनी चाहना के टकराव के कारण दुःखी सुखी होता है। जो सत् को जान कर जाग जाता है उसका सीस झुक जाता है -

यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति मानवाः।
तदा देवमविज्ञाय दुःखस्यान्तो भविष्यति।। श्वेताश्वेतरोपनिषद् ६/२० श्लोक

उपनिषद् का वाक् है कि बिना भगवान के जाने दुःख से पार उतरना ऐसा ही असम्भव है जैसे आसमान को रस्सी से लपेटना। क्या भगवान के जानने से दुःख मिट जायेगा? जब तक कामनायें मिट नहीं जातीं, जीव का दुःख मिट नहीं सकता चाहे भगवान को जाने चाहे न जाने। यह उपनिषद् का वाक् समझ नहीं आया।

माँ :- राम राम राम.....

प्रश्न अर्पण -

उपनिषद् में तूने कहा, तुमको जाने सुख मिले।
महा विपरीतता भी होये, मन में चैना आ जाये।।१।।

जीवन में यह समझा हूँ, परिस्थिति विभिन्न रे हो।
कोई दुःखमय कोई सुखमय हो, मन उसमें जाये है खो।।२।।

चाहना ही रे कारण है, जो सुखी दुःखी कर देती है।
तोरा ज्ञान तुम राम कहो, कैसे दुःख हर लेती है।।३।।

समझ में बात यह न आये, चाहना भी रहे और दुःख भी मिटे।
राम बात यह आज कहो, क्या यह वाक् वहाँ सत्य कहे।।४।।

अटपटी सी भाषा यह, आज समझ कुछ न आये।
कृपा करो ओ दयानिधे, राज़ यह सुलझ जाये।।५।।

तत्व विस्तार :

सुन रे मना सुन तो सही, जो राम कहा वह सत्य कहा।
उपनिषदन् में जो भी कहा, अक्षरशः अरे सत्य कहा।।६।।

कहें राम को जान ले, अब सोच राम रे किसे कहें।
बार बार वह जन्म जो ले, जो जन्म ले वह किसे कहें।।७।।

कभी श्याम का रूप धरे, कभी नानक बन के आते हैं।
बार बार वह जन्म लेई करी के, क्या समझाते हैं।।८।।

है राम सत्य यह जान ले, अरे राम सत्य पहचान ले।
वह सत्यता जो जीवन का, निर्माण करे उसे जान ले।।९।।

जब वह सत्य रे जान लिया, जग का राज़ ही जान लिया।
क्योंकर यह निर्माण हुआ, प्रमाण सहित यह जान लिया।।१०।।

यह जग रचना सम्पूर्ण जो, सत् ने रची पहचान लिया।
कर्मफल परिणाम में, सत् ने ही यह जान लिया।।११।।

श्रेष्ठ न्यून जो भी दीखे, उसे राम रचा यह मान लिया।
पंगु, रंक या नृप दीखे, वा रचना यह जान लिया।।१२।।

कोई न चाहे निर्धन भये, कोई न चाहे पंगु भये।
कोई न चाहे दुःख मिले, कोई न चाहे वह लुट जाये।।१३।।

सब चाहें मुझे श्रेष्ठ मिले, श्रेष्ठ ही मैं रे कहलाऊँ।
सब चाहें सर्वोत्तम मैं, आप ही रे हो जाऊँ।।१४।।

फिर भी पूछो गर सत् से, ऐसा रे क्यों नहीं हुआ।
तब जानोगे कर्मफल ने ही, सामने रूप धरा।।१५।।

जो मिला जो मिल रहा, जो छूटा जो छुट रहा।
निर्माणित सत् ने आप किया, जिसको यह है देख रहा।।१६।।

राम है क्या कस निर्णय करे, राम न्याय किसे कहते हैं।
सत्य न्याय जग सारा है, जानि के जो यहाँ बैठे हैं।।१७।।

उन्हें जो भी मिले उसे देख करी, सीस झुका वह देते हैं।
परिणाम यह है कर्म का, यहाँ चित टिका वह देते हैं।।१८।।

शब्द ज्ञान रे ज्ञान नहीं, जो हम रे मान लें।
राम तत्व क्या रे है, जानी सीस वहाँ झुके।।१९।।

तब चाहे जो वह चाहे, चाहना आप ही झुक जाये।
निर्माणित सब है जान करी, यहाँ अहंकार ही मिट जाये।।२०।।

जो मिले वा देन जान, वा रज़ा में वह चले।
चाहना आपुनो कहाँ रहे, गर सत्यता यह देख वह ले।।२१।।

गर ज्ञान है तब चाहना नहीं, जाने चाहे नहीं मिले।
लाख बुद्धि विधियाँ कहे, निर्माणित ही उसे मिले।।२२।।

लाख कहे मैं कस करूँ, लाख कहे मैं बस करूँ।
जब जान ले यूँ नहीं मिले, तब कहे वा ही करूँ।।२३।।

जब लौ राम को न जाना, तब लौ ही टकराये है।
यह चाहना है जो सत्त्व से, बार बार टकराये है।।२४।।

जो परिस्थिति उठी, वह राम ने ही लाये धरी।
कहीं लुट गया कहीं लूट लिया, निर्णय इसकी हो चुकी।।२५।।

सत्त्व ज्ञान गर हो जाये, सत्त्व को गर तू जान ले।
प्रकट जहान यह जितना है, वा प्रमाण तू जान ले।।२६।।

जो निर्माणित हो चुका, वह तो रुक नहीं पायेगा।
वह क्यों हुआ यह जान ले, अरे दुःख घर नहीं आयेगा।।२७।।

विवेक राही जो समझा, जो समझा उसको मान ले।
वा पाछे जो सत्त्व है, उसको अब पहचान ले।।२८।।

उस सत् पे जान मना विश्वास होता जायेगा।
जितना जितना सत् माने, दुःख यह रह नहीं पायेगा।।२९।।

ज्यों जब जाने नहीं मिले, वहाँ पे मौन ही होते हैं।
जो कभी न मिल सके, भावन में गौण ही होते हैं।।३०।।

निर्धन कभी न सोच सके, वह कभी राजा बन जाये।
इस कारण वह नृप से, कभी नहीं टकराये।।३१।।

नृप को देख निर्धन से, द्वेष कभी नहीं आता है।
वा दर्शन रे कर करी, वह दुःखी नहीं हो जाता है।।३२।।

इसी विधि समझ मना, जब जाने चाहुक नहीं मिले।
सत् की सत्यता जान ले, मन विचलित नहीं हो सके।।३३।।

जब समझे मैं यह करूँ, तो मुझे मिल जायेगा।
या इसी विधि ठुकरा रे दे, वह बिछुड़ रे जायेगा।।३४।।

ऐसी भावना ही जानो, दुःखी सुखी कर देती है।
जिसने जान लिया यह ज्ञान, मौन कर ही देती है।।३५।।

शब्द ज्ञान रे ज्ञान नहीं, श्रद्धा वा में चाहिये।
श्रद्धा शनैः शनैः बढ़े, फिर आप वह हो जाईये।।३६।।

मन्दिर में बहु शास्त्र पढ़े, उसे ज्ञान नहीं मानिये।
जो पढ़ा और याद भये, उसको ही पहचानिये।।३७।।

जहाँ ज्ञान है वहाँ ज्ञानी नहीं, ज्ञानी शब्द ही जाने है।
जहाँ ज्ञान है वह तो आप भया, जग प्रतिमा इसे माने है।।३८।।

दिनचर्या में जो समझा, वा तन लेखनी बन जाये।
या कहलो तन पुतरी भये, सूत्रधारी वह बन जाये।।३९।।

इसका राज़ बस इतना है, विधि जान बस इतनी है।
जो समझा तू राम से, सोच मन मानी कितनी है।।४०।।

जितना जितना मान ले, चैना आ जायेगा।
निर्माणित जब जानेगा, चाह राही न घबरायेगा।।४१।।

चाहना ही यह टकराये, दुःखी सुखी यह कर ही दे।
राम शरण में जो जाये, दुःख उसके हर ही ले।।४२।।

जो भी मिले जैसा भी मिले, वहाँ पे वह न घबराये।
राज़ तत्व का समझ ले, तब ही तो यह हो पाये।।४३।।

राम का ज्ञान भी पास रे हो, संग चाहना भी अपनी हो।
जान मना जान तू ले, यह कभी न हो सके।।४४।।

यह द्वौ मिलन नहीं हो सके, द्वन्द्व उठा नहीं पायेगा।
जिसने सत्त्व को जान लिया, वह सत्त्व आप हो जायेगा।।४५।।

बस इतनी सी बात है, राम को सत्त्व जान लो।
राम ज्ञान ही सत्त्व ज्ञान, सत्यता यह जान ले।।४६।।

जीते जी इस पल कहो राम राम राम .....
राम राम राम .....❖

काम, क्रोध तथा लोभ, तीनों नरक के द्वार हैं...

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ।। १६/२१

यहाँ भगवान अर्जुन को आसुरी सम्पदा का स्वरूप बताते हुए कहते हैं कि :

शब्दार्थ :

१. **काम, क्रोध तथा लोभ, तीनों नरक के द्वार हैं;**
२. **(और) आत्मा का नाश करने वाले हैं,**
३. **इसलिए इन तीनों को छोड़ देना चाहिये।**

तत्व विस्तार :

नन्हूँ! भगवान यहाँ काम, क्रोध, और लोभ को नरक के द्वार कहते हैं।

भगवान ने इन्हें :

क) महापापी गुण कहा है। (३/३७)
ख) महा वैरी कहा है। (३/३७)
ग) भोगी, किन्तु नित्य अतृप्त रहने वाला कहा है। (३/३७)

ये गुण ही,

१. असुरत्व की नींव होते हैं।
२. असुरत्व का वर्धन करने वाले होते हैं।
३. जीव से महापाप करवाते हैं।
४. जीव का महापतन करवाते हैं।

***काम :**

काम को पुनः समझ ले :

१. किसी भी विषय से अनुराग काम है।
२. अभीष्ट पदार्थ की रुचि को काम

फुटनोट : * आभा भण्डारी के लिये गीता का इस विस्तार में स्थान-स्थान पर उन्हें ही सम्बोधित किया है।

कहते हैं।

३. अभीष्ट पदार्थ की आकांक्षा को काम कहते हैं।

४. किसी भी विषय के उपभोग में अभिरुचि को काम कहते हैं।

५. किसी अर्थ के पाने के मनोरथ को काम कहते हैं।

नन्हूँ! यह कामना स्थूल या सूक्ष्म, कोई भी हो सकती है। यह कामना :

क) विषयों की भी हो सकती है।

ख) विषयों राही उपलब्ध सुख की भी हो सकती है।

ग) विषयों राही उपलब्ध गुण की भी हो सकती है।

घ) विषयों राही मान की भी हो सकती हैं।

ङ) विषयों के उपभोग की भी हो सकती है।

फिर 'काम' अहं का दास है।

१. काम केवल अपने तन के उपभोग के लिए ही किसी विषय को चाहता है।

२. काम केवल इन्द्रियों की रसना पूर्ति की चाहना को कहते हैं।

३. काम जीव को अंधा बना देता है। यह काम ही राग का दूसरा नाम है। यह काम ही द्वेष को भी उत्पन्न करता है।

४. कामना सूक्ष्म की हो, चाहे स्थूल की हो, यह तबाह ही करती है।

भाई! हर रुचि, हर चाहना, जो भी हो, यह कामना ही है।

लोभ :

क) लोभ तब होता है, जब विषय संग्रह की चाह उठ जाये।

ख) गर विषय मिलें पर अतृप्ति बढ़े, तब अपने वांछित विषयों को इकट्ठा करने की चाहना लोभ है।

ग) जितना मिले, उतनी प्यास और बढ़ती है; यह प्यास ही लोभ है।

घ) इतनी प्यास बढ़े कि अंधा बना दे, यह लोभ के कारण होता है।

ङ) इतनी प्यास बढ़े कि सत्यता को भूल जाये, यह लोभ के कारण होता है।

च) इतनी प्यास बढ़े कि उचित अनुचित भूल जाये, यह लोभ के कारण होता है।

छ) कर्तव्य विमुखता, सौन्दर्य पूर्ण गुणों का वर्जन, इन्सानियत का वर्जन तथा दैवी गुणों का वर्जन, लोभ के कारण ही होता है।

****क्रोध :***

१. क्रोध तब उठता है, जब :

- कामना तो उठे पर उसकी पूर्ति में विघ्न आ जायें।
- बुद्धि पूर्ण रूप से अंधी हो जाये।
- कामना पूर्ति की विधि समझ न आये और मूर्ख मन रोंद मारने लगे।

२. अपने बचाव का मूर्खतापूर्ण तरीका क्रोध है।

३. वांछित फल पाने का मूर्खों का तरीका क्रोध है।

४. दूसरों के प्रति अंधेपन से पूर्ण मानसिक उत्तेजना क्रोध है।

५. अपनी हार मानने का अंधा तरीका क्रोध है।

६. अपनी बेसमझी के छिपाव का मूर्खतापूर्ण तरीका क्रोध है।

७. क्रोध बुद्धिहीनता का प्रमाण है।

८. हारे हुए का मूर्खतापूर्ण जीतने का तरीका क्रोध है।

---

*क्रोध के विस्तार के लिये ३/३७, १६/२, ४ देखिये।

९. न्यून जीव की अपने आप को श्रेष्ठ साबित करने की मूर्खतापूर्ण विधि क्रोध है।
१०. जब हक़ीक़त का सामना करना कठिन हो तो मूर्ख की अपरिपक्व मानसिक अवस्था का परिणाम क्रोध है।
११. अप्रौढ़ बुद्धि का प्रमाण क्रोध है।

भाई! एक प्रकार के पागलपन का दूसरा नाम क्रोध है। जो थोड़ी सी बुद्धि बची है, यह पागलपन, उसे भी ख़त्म कर देता है।

- अपनी ज़िम्मेवारी से मुख मोड़ने की विधि भी क्रोध है।
- कमज़ोर इन्सान का बल क्रोध है।
- अज्ञानी का प्रहार क्रोध है।
- अहंकार और दर्प का रूप क्रोध है।
- क्रोध अंधे की ज़बान है।
- क्रोध अंधे का अंधापन है।
- क्रोध मानसिक भीरुता की निशानी है।
- क्रोध बुद्धि की कायरता है।

शरीर की आयु चाहे जितनी भी बड़ी हो परन्तु क्रोधी मानसिक स्तर पर बच्चे ही होते हैं। यूँ कह लो, क्रोधी की शारीरिक आयु बढ़ती है, स्थूल में कमाने की शक्ति भी बढ़ती है, परन्तु मनोस्थिति तथा मनोअवस्था बच्चे के समान ही रह जाती है।

क) रुचि, अरुचि में बंधे रहे, उचित-अनुचित न समझ सके।
ख) अपने हक़ तो समझ गये, दूसरे के हक़ न समझ सके।
ग) 'मैं श्रेष्ठ हूँ' यह तो समझ गये, दूसरे भी श्रेष्ठ हैं, यह न समझ सके।
घ) 'मैं इन्सान हूँ' यह तो समझ गये, दूसरे भी इन्सान हैं, यह न समझ सके।

'मैं' का प्रधान हो जाना ही जीव को अंधा बना देता है।

भगवान कहते हैं, भाई! कामना से लोभ उठता है, लोभ से क्रोध उठता है और क्रोध से अंधापन हो जाता है। पूर्ण पाप इसके कारण होते हैं। ये सब ही नरक के द्वार हैं और त्याज्य हैं। इन्हें छोड़ दे, क्योंकि :

१. ये गुण ही आत्म हनन का कारण हैं।
२. ये गुण सत् से दूर करने वाले हैं।
३. ये गुण परम गुण से दूर करने वाले हैं।
४. ये गुण मिथ्यात्व गुण वर्धनकर हैं।
५. ये गुण भगवान के गुणों के विरोधी गुण हैं।
६. ये संग, मोह और अज्ञानवर्धक गुण हैं।
७. ये स्वरूप से दूर करने वाले गुण हैं।
८. ये अपने आप को गिराने वाले गुण हैं।
९. ये बुद्धि विनाशक गुण हैं।

इसलिए कहते हैं, इन गुणों को छोड़ दे।

नन्हूँ! जीव क्रोध का अभ्यास अपने घर में शुरू करता है। जब वह दूसरे से अपनी रुचि पूर्ण करवाना चाहता है तो वह क्रोध करता है। माँ बाप बच्चे को शांत करने के लिये उसके क्रोध के कारण को दूर करना चाहते हैं और उसको वांछित विषय दे देते हैं। जब बच्चा बार-बार क्रोध करके अपने रुचिकर विषय को पा लेता है, यह ही क्रोध के अभ्यास की नींव है। नन्हीं! क्रोध केवल अपने को प्यार करने वालों पर ही किया जाता है। क्रोध से सर्वप्रथम माँ बाप झुकते हैं और अपने बच्चे की बात मान लेते हैं। फिर आपके भाई, बहिन झुकते हैं और आपकी बात मान लेते हैं। फिर आपके आश्रित लोग झुकते हैं और आपकी बात मान लेते हैं। यही क्रोध के जन्म तथा वर्धन का पलना है।

क्रोधी :

क) अपने घर में क्रोध करते हैं और अपने घर वालों को दुःखी करते हैं।
ख) अपने नौकरों पर क्रोध करते हैं और अपने चाकरों को दुःखी करते हैं।
ग) अपने आश्रित गण, यानि बच्चों तथा पत्नी या पति पर क्रोध करते हैं और उन्हें दुःखी बना देते हैं।

नन्हूँ! यह क्रोध ही महादुःख का कारण है। यह क्रोध ही जीव को इन्सान से हैवान बना देता है। क्रोध ही जीव को,

क) अंधा बना देता है।
ख) कर्तव्य विमुख कर देता है।
ग) सम्पूर्ण दैवी गुणों से वंचित कर देता है।

फिर क्रोधी को जीवन में सुख तो कभी मिल ही नहीं सकता। सुख का स्थान अपना घर होता है और क्रोधी अपने क्रोध से उस घर को जला देता है। जिन लोगों से आप प्यार चाहते हैं, उनके मन को भी आपका क्रोध जला देता है।

- दुःख का सबसे बड़ा सहयोगी क्रोध है।
- जीव का सबसे बड़ा दुश्मन क्रोध है।
- नरक का सबसे बड़ा द्वार क्रोध है।

फिर नन्हूँ! काम ही वह कारण है जो क्रोध को जन्म देता है। अपनी कामना पूरी करने के लिए ही तो जीव क्रोध करता है। काम से ही इन्सान दूसरों को दबाना चाहता है। काम के कारण ही इन्सान अंधा होने लगता है। फिर लोभ भी कामना पूर्ति करने वाले विषय को अपने अधिकार में रखने की चाहना ही तो है।

वास्तव में देखा जाये तो :

१. अहं का प्रथम कर्म इन तीनों को जन्म देता है।
२. अहं का प्रथम कार्य जीव को व्यक्तिगत करके उसमें व्यक्तिगत कामना उत्पन्न करना है।
३. जब कामना पूर्ण नहीं होती तो वह क्रोध करता है।
४. जब कामना कभी पूरी होती है और कभी पूरी नहीं होती तब वह जीव कामना को पूरा करने वाले विषय का लोभ करता है और उस कामना को पूरा करने वाले विषय को अपने काबू में रखना चाहता है।

नन्हूँ! सर्वप्रथम जब जीवात्मा तन से संग करता है तो अहं का जन्म होता है। अहं सर्वप्रथम तन के लिये कामना को उत्पन्न करता है। कामना, लोभ और क्रोध को जन्म देती है। फिर ये सब मिल कर जीव के लिये नरक बनाते हैं।

वास्तव में यह नरक उनके अपने लिये बन जाता है। अपना नाश तो ये करते हैं, ये दूसरों का भी नाश कर देते हैं, इसलिये ये त्याज्य हैं।

एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः।
आचरत्यामनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम्।।२२।।

अब भगवान काम, क्रोध तथा लोभ के त्याग का फल कहते हुए कहने लगे कि :

शब्दार्थ :

१. हे अर्जुन ! तम के इन तीन द्वारों से छूटा हुआ,

२. **पुरुष अपने कल्याण का आचरण करता है।**
३. **फिर वह परम गति को प्राप्त होता है।**

तत्व विस्तार :

सत्य अभिलाषिणी नन्हीं आभा!

भगवान ने काम, क्रोध और लोभ को तम के द्वार कहा है।

तम :

क) तम वह चादर है जो सत्त्व को छिपा देती है।
ख) तम वह आवरण है जो सत्य को देखने नहीं देता।
ग) तम वह आवरण है जो गुणों को विकृत कर देता है।
घ) तम वह आवरण है जिसके कारण जीव की बुद्धि काम नहीं करती।
- तम ही देहात्म बुद्धि को जन्म देता है।
- तम ही जीव को देह के तद्रूप कर देता है।

नन्हूँ! तम के जन्म के बाद ही रजो गुण का वर्धन होता है और रजोगुण के बढ़ने पर तमोगुण और बढ़ जाता है। तम के द्वार से ही काम, क्रोध और लोभ निकलते हैं और बढ़ते हैं।

भगवान कहते हैं, 'यदि ये तम के द्वार बन्द हो जायें तो मनुष्य अपने कल्याणमय पथ का आचरण करेगा। तब वह स्वतः श्रेय पथ का आचरण करेगा। क्योंकि नन्हीं जान्!

यदि जीव में, काम, क्रोध और लोभ न हों तो :

१. नरक के द्वार स्वतः बन्द हो जाते हैं।
२. क्रूर कर्म स्वतः बन्द हो जाते हैं।
३. मिथ्यात्व पूर्ण आचरण स्वतः बन्द हो जाते हैं।
४. सकाम कर्म, अहं प्रेरित कर्म, घृणा, द्वेष और अत्याचार करने का कारण ही नहीं रहेगा।
५. अन्याय, किसी के प्रति वैमनस्य और किसी को धोखा देने का कारण ही नहीं रहेगा।
६. अवास्तविकता में रमण बन्द हो जायेगा।

नन्हूँ! वास्तव में, असुरत्व पूर्ण व्यवहार की नींव ये तम के द्वार काम, क्रोध और लोभ ही हैं। यदि काम, क्रोध और लोभ न रहें तो देवत्व स्वतः सिद्ध हो जायेगा। सतोगुण, काम क्रोध और लोभ के कारण डूबता है।

काम ही बीज है असुरत्व का, निष्कामता ही बीज है देवत्व का। काम न रहे तो कर्म निष्काम हो जाते हैं। निष्काम कर्म ही तो,

क) श्रेय पथ है।
ख) परम मिलन का पथ है।
ग) यज्ञमय पथ है।
घ) कर्तव्य प्रधान कर्म हैं।
ङ) परम के अपने कर्म हैं।
च) यज्ञ रूप हैं।

कोई कामना ही न रही तो :

- पूजा भी निष्काम हो जायेगी।
- ज्ञान भी निष्काम हो जायेगा।
- कर्म भी निष्काम हो जायेंगे।

तब ही तो जीव जो भी ज्ञान पायेगा, तत्काल विज्ञान में परिणत हो जायेगा। या यूँ कह लो, ज्ञान के मिलते ही, ज्ञान के समक्ष आते ही जीव उसे जीवन में ला सकेगा। तब जीव इक पल में उसकी प्रतिमा बन जायेगा। परम गति तो तब वह पा ही लेगा। ❖

- परम पूज्य माँ

अर्पणा
समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
जून २०१४

आध्यात्मिक समृद्धि की ओर

साधना दिवस

हमारे जीवन में परम पूज्य माँ की ज्योतिर्मय उपस्थिति को, ९ मार्च २०१४ को, साधना दिवस के रूप में मनाया गया। परम पूज्य माँ के जीवन का यही प्रकाश हमें निरन्तर आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर करता है। आज भी पूज्य माँ के शब्द श्रोता को आनन्द एवं आत्ममुक्ति की ओर चलने के लिए प्रेरित करते हैं।

परम पूज्य माँ का समाधि दिवस

हर साल १६ अप्रैल परम पूज्य माँ की महासमाधि के दिवस के रूप में मनाया जाता है। खूबसूरत सुगन्धित फूलों से सजी समाधि पर सभी ने अगरबत्तियाँ जलाईं तथा श्रद्धासुमन अर्पित किए। भक्तिपूर्ण संगीत ने सभी के हृदयों की अन्तरतम भावनाओं को प्रकट करने के साथ-साथ, उन्हें आध्यात्मिक सुदृढ़ता भी प्रदान करी।

अस्वस्थ होने के बावजूद भी छोटे माँ वहाँ उपस्थित रहे।

चण्डीगढ़ एवं अमृतसर में हस्तशिल्प वस्तुओं की बिक्री

हरियाणा के गाँवों की महिलाओं द्वारा निर्मित हस्तशिल्प की खूबसूरत हाथ की कढ़ाई की गई वस्तुओं को 'अरोमा होटल', चण्डीगढ़ में, २० से २२ मार्च तक, बिक्री के लिए प्रदर्शित किया गया।

२८ से ३० मार्च तक, अमृतसर में लगी सेल में भी इन वस्तुओं की बहुत सराहना की गई। अर्पणा अपने सभी मित्रों का आभार प्रकट करता है जिन्होंने इस बिक्री के आयोजन में सहायता की। इस सेल से ग्रामीण परिवारों की सैंकड़ों महिलाएँ लाभान्वित होती हैं।

हमारे प्रिय जनों की स्मृति में

अप्रैल के महीने में, अर्पणा परिवार ने २ बहुत प्रिय एवं महत्वपूर्ण सदस्यों को खो दिया। श्रीमती राजरानी चौपड़ा एवं श्रीमती संतोष गुप्ता - दोनों अत्यन्त समर्पित, अनुकम्पापूर्ण अर्पणा परिवार के सदस्य थे। अर्पणा उनके तत्काल परिवारों के लिए अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है। उनका स्थान हमारे हृदय में हमेशा बना रहेगा।

अर्पणा अस्पताल

घरौंडा में भी अर्पणा का एक क्लिनिक

३ मार्च को, पास के ही शहर घरौंडा में, अर्पणा द्वारा कुछेक चिकित्सा सुविधाओं वाले, एक क्लिनिक का उद्घाटन किया गया। अर्पणा अस्पताल से एक चिकित्सक, एक शल्य विशेषज्ञ एवं एक महिलाओं की चिकित्सक रोज़ क्लिनिक attend करते हैं। रोगी की आगे की देखभाल के लिए ज़रूरी मरीज़ों को अर्पणा अस्पताल में लाया जाता है। यह सभी के लिए सस्ती, आधुनिक स्वस्थ्य देखभाल के विस्तार की ओर एक क़दम है।

शिशुओं के लिए वार्ड का उद्घाटन

१ मई को, अर्पणा अस्पताल में ब्रिगेडियर (सेवानिवृत्त) डॉ. ए. के. चौधरी, चिकित्सा अधीक्षक, द्वारा ९ बिस्तरों वाले शिशुओं के वार्ड का उद्घाटन किया गया। यह ग्रामीण बच्चों की चिकित्सा देखभाल की सुविधा के लिए अर्पणा की ओर से एक महत्वपूर्ण क़दम है।

डिजिटल एक्सरे की स्थापना

बहुत समय से प्रतीक्षित, २ मई को अर्पणा अस्पताल में डिजिटल एक्सरे की स्थापना की गई। इससे सम्पूर्ण भारत एवं विश्वभर के विशेषज्ञों द्वारा एक्सरे की रिपोर्ट जाँचना सम्भव हो सकेगा।

अर्पणा अस्पताल द्वारा आसपास के क्षेत्रों में शिविर

५ निःशुल्क/सहायता प्राप्त हड्डी रोग शिविर अर्पणा अस्पताल में, डॉ. लोकेश चराया द्वारा, फरवरी व मार्च में एवं तरावड़ी, समालखा और कैरवाली गाँव में अप्रैल में, १९१ रोगियों के लिए आयोजित किये गये।

९ नेत्र शिविर फरवरी, मार्च और अप्रैल में समालखा, सनौली और पानीपत कस्बों में आयोजित किये गये। मरीज़ों की मुफ्त/रियायती दरों पर सर्जरी की गई जबकि परिवहन, बिस्तर प्रभार एवं भोजन सब निःशुल्क थे।

३ कार्डिएक शिविर, डॉ. अनिल ढल द्वारा, जिनमें से फरवरी एवं मार्च में २ शिविर अर्पणा अस्पताल में और १ शिविर अप्रैल में तरावड़ी में, आयोजित किये गये।

१ न्यूरोपैथी शिविर, यू. के. से आये डॉ. स्टीव कोट्स के द्वारा, अर्पणा अस्पताल में आयोजित किया गया जहाँ १२ रोगियों की जाँच की गई।

१ छः दिवसीय स्त्री रोग शिविर ६ से ११ मार्च को अर्पणा अस्पताल में आयोजित किया गया जिससे १६५ रोगी लाभान्वित हुए।

३ कर्मचारी स्वास्थ्य जाँच शिविर - फरवरी में अर्पणा अस्पताल में १ और अप्रैल में पानीपत में २ शिविर आयोजित किये गये, जिससे ९५ कर्मचारी लाभान्वित हुए।

१ दो दिवसीय अस्थि जाँच शिविर, अर्पणा अस्पताल में शुभ लैबोरेट्री, अम्बाला, के सहयोग से आयोजित किया गया। इससे १७९ रोगी लाभान्वित हुए।

हरियाणा

मज़दूर की ग्रीवा चोट का उपचार

रजिन्दर, ३९ वर्ष का एक कृषि मज़दूर है जो काम के दौरान ग्रीवा चोट से ग्रसित हुआ। इस कष्टदायी चोट से वह अपने अंगों को चला पाने में असमर्थ हो गया।

करनाल में सहायता न मिलने से हताश होकर उसे अर्पणा अस्पताल में लाया गया। अर्पणा अस्पताल के डॉ. लोकेश चराया, MS Ortho, Fellow in Arthroscopy & Arthroplasty, द्वारा उसका काफ़ी मुश्किल हड्डी का ऑपरेशन किया गया। अर्पणा अस्पताल में इस प्रकार का यह पहला ऑपरेशन था।

विकलांगों के लिए नया वाहन

बैजनाथ भण्डारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा, अर्पणा को, एक १० सीटों का वाहन, विकलांग लोगों के कार्यक्रमों के लिये भेंट किया गया। इसका इस्तेमाल प्रशिक्षण सत्रों और कार्यशालाओं इत्यादि के लिए प्रशिक्षकों, कार्यकर्ताओं और लाभार्थियों के लिए किया जायेगा।

अर्पणा, भारतीय विकास एवं राहत कोष, यू.एस.ए., *Christoffel Blindenmission,* जर्मनी, बैजनाथ भण्डारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली एवं टाइड्ज़ फाऊँडेशन, यू.एस.ए. का अर्पणा द्वारा चलाये जा रहे विकलांग लोगों के सशक्तिकरण कार्यक्रमों में सहयोग के लिए अत्यन्त आभारी है।

हिमाचल

महिलाओं के लिए सिलाई का प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिमाचल प्रदेश के गाँव मनकोट की २० बेरोज़गार महिलाओं के लिए, फरवरी से अप्रैल तक, अर्पणा एवं नाबार्ड द्वारा ३ मास की अवधि का सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्वरोज़गार की ओर प्रोत्साहित करने के लिए प्रशिक्षुओं को, २२ अप्रैल को, चम्बा के बाजार में बुटीक एवं 'रंग महल' के हस्थशिल्प केन्द्र की बुनाई एवं कढ़ाई प्रदर्शीनियो का दौरा करा गया।

किसानों की जानकारी बढ़ाने के लिए दौरा

१० एवं ११ मार्च को, कोलका, भालका एवं प्रिंगल गाँवों से, २० किसानों ने हिमाचल प्रदेश में स्थित सरु, चम्बा के सूचना केन्द्र का दौरा किया। यहाँ के सैन्टर के प्रभारी, डॉ. राजीव रैना ने, बेमौसमी सब्जियों की खेती की नई तकनीकों के लिए किसानों को सक्षम करने पर विशेष बल दिया।

श्रेष्ठ गुणवत्ता के बीज, बुवाई एवं सब्जियों में रोगों की रोकथाम के तरीकों पर चर्चा की गई। किसानों को मुफ्त साहित्य एवं सब्जियों के श्रेष्ठ गुणवत्ता वाले बीज दिये गये।

दिल्ली - मोलरबन्द में विभिन्न कार्यक्रम

उपचारात्मक कक्षायें

एक समर्पित स्वयंसेवक, श्रीमती बानी राजगढ़िया ने १२५ बच्चों की पहचान की, जिन्हें शैक्षणिक सहायता की आवश्यकता थी। उपचारात्मक कक्षाओं के ३ मास के गहन कार्यक्रम में, श्रीमती बानी ने प्रत्येक बच्चे के विकास का मूल्यांकन करके, उन्हें सक्षम बना कर उनकी सम्बन्धित कक्षाओं में भेजा।

AWIC (Association of Writers and Illustrators for Children) ***समारोह***

२ अप्रैल को, AWIC के वार्षिक कार्यक्रम में अर्पणा के १४ छात्रों ने भाग लिया। ३ छात्रों को वर्ष के सर्वश्रेष्ठ पाठक एवं रंजीत को कला पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पदमश्री, सुश्री मनोरमा जाफ़ा ने महात्मा गाँधी पर व्याख्यान दिया। उसके बाद बच्चों से मूलाकात की एवं बातचीत भी की।

'सितारों के पास' का प्रदर्शन

अर्पणा से ७० बच्चों ने, श्री राम सैन्टर में, कल्पना चावला के जीवन पर आधारित एक प्रेरणादायक नाटक का प्रदर्शन किया, जो भारत की पहली महिला अंतरिक्ष यात्री थीं। इसे अर्पणा की सांस्कृतिक निर्देशक, श्रीमती सुषमा सेठ, द्वारा लिखा एवं निर्देशित किया गया था।

मोलरबन्द में वार्षिक लाइब्रेरी दिवस

अर्पणा का वार्षिक लाइब्रेरी दिवस, २२ अप्रैल को मनाया गया। इस दिन हम दिल्ली में अर्पणा की विकास सेवाओं की संस्थापक, श्रीमती उषा सेठ को सम्मानित करते हैं। यहाँ १०७ छात्रों ने राष्ट्रीय और पौराणिक नायकों पर आधारित लघु नाटक एवं संगीत और नृत्य भी प्रदर्शित किये।

हम अर्पणा के शैक्षिक कार्यक्रमों के समर्थन के लिए, एस्सल फाऊँडेशन, अवीवा लाइफ इन्सोरेंस कम्पनी एवं केयरिंग हैण्डस फॉर चिल्ड्रन, यू.एस.ए., के अतीव आभारी हैं।

Your assistance is needed to continue these programmes:

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are Both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.

FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001

FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002

Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to: **Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037**

Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to: **Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037**

Tel: 91-184-2380801, Fax: 91-184-2380810, at@arpana.org and arct@arpana.org

Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.

Mr. Harishwar Dayal, Executive Director of Arpana. Mobile: +91-9818600644

Mrs. Aruna Dayal, Director Development Mobile +91-9896242779, +91-9873015108